सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यू.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

फरवरी, 2016 वर्ष 14 अंक 12

अच्छे अख़लाक़ (सदाचार)

अदब बड़ों का सब अपनायें
छोटों पर शफ़क़त दिखलायें
बड़ों को अपने करें सलाम
उन को दें हम सुख आराम
अब्बा अम्मा दादा दादी
चाचा चाची नाना नानी
सब को दें आदर सम्मान
उन की ख़िदमत में दें जान
छोटे बच्चे किसी के घर के
अपने घर के पास के घर के
बच्चों से हम प्यार से बोलें
उन से मीठे बोल ही बोलें

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
हया और ख़ौफ	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	06
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	08
शिक्षक के गुण	अफ़ज़ल हुसैन	14
सीरते पाक को ग़ैरों के सागने	मौलाना सै0 मु0 हमजा हसनी नदवी	21
ड्रेस कोड	इं0 जावेद इक़बाल	22
अल्लाह तआ़ला ने हज़ की तौफीक़	इंजीनियर महमूदुल हसन अंसारी	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	28
आदर्श न्याय (ग्रहीत)	जमाल अहमद नदवी	33
उर्दू में प्रयोग फारसी तरकीबें	सम्पादक	35
हया (पद्य)	मौलवी मु0 इस्माईल मेरठी	36
कुछ उर्दू शब्दों का प्रचलित हिन्दी	इदारा	37
लौकिक त्रुटियाँ	नज्मुस्साकिब अ़ब्बासी नदवी	38
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-आले इमरानः

अनुवाद– बेशक अल्लाह से जमीन और आसमान की कोई चीज़ छुपी नहीं(5)[1] वही तो है जो माँ के पेट में तुम्हारा रूप बनाता है जिस तरह चाहता है, उसके अलावा किसी की बंदगी नहीं, वह ज़बरदस्त हिकमत वाला है(6)[2] ऐ नबी, वही खुदा है जिसने यह किताब तुम पर उतारी है। इस किताब में दो प्रकार की आयतें हैं: एक मोहकम अर्थात उनके अर्थ स्पष्ट और अटल हैं जो किताब के मूल आधार हैं और दूसरी मुताशाबेह (उपलक्षित) अर्थात जिनके अर्थ मालूम या अटल नहीं, जिन लोगों के दिलों में टेढापन है वे फितने (गुमराही) की तलाश में सदैव उपलक्षित ही के पीछे पड़े रहते हैं और उनके अर्थ पहनाने की कोशिश किया करते हैं। हालांकि उनका वास्तविक अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता! इसके विपरीत जो लोग पक्के इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान लाये यह सब हमारे रब की ओर से है और समझाने से वही समझते हैं जिनको अक़्ल है(7)[3] । (ऐसे लोग यह दुआ करते हैं कि) ऐ हमारे पालनहार! हमें सही राह देने के बाद हमारे दिलों को टेढ़ा न कर, और अपने पास से हमें रहमत (कृपा) प्रदान कर दे बेशक तू खूब–खूब देने वाला है(8)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. अर्थात जिस प्रकार अल्लाह का अधिकार तथा स्वामित्व सम्पूर्ण है उसी प्रकार उसका इल्म भी व्यापक है। अर्थात दुन्या की कोई छोटी बड़ी चीज़ या कोई छोटा बड़ा मुजरिम कहीं भाग कर छुप नहीं सकता है। यहीं से सचेत कर दिया गया कि ईसा अलैहिस्सलाम खुदा नहीं हो सकते क्योंकि वह उतना ही ज्ञान रखते थे जितना अल्लाह ने उनको बतला दिया था।

2. उस अल्लाह ने अपने इल्मो हिकमत के मुताबिक अपनी पूर्ण ताकत व कुदरत से तुम्हारा रूप माँ के पेट की तीन कोठरियों में जिस प्रकार चाहा काला, गोरा, मर्द, औरत बनाया और अरबों खरबों लोगों में एक का रूप दूसरे से इस प्रकार नहीं मिलता कि फर्क करना मुश्किल हो जाये। अल्लाह के इस व्यापक इल्म और पूर्ण ताकत व कुदरत की बौद्धिक मांग ये है कि इबादत केवल उसी की की जाये। वह पूर्ण तौर पर क़ादिर है कि जिसको चाहे माँ–बाप से, जिसको चाहे बिना बाप के, जिसको चाहे बिना माँ (जैसे हव्वा अलै0) के पैदा कर दे, आदम अलै0 को तो उसने बिना माँ बाप के पैदा कर दिया, अब उसकी

हिकमतों तथा ज्ञान को कौन सम्पूर्ण समझ सकता है।

3. मोहकम अर्थात अटल आयतों से मुराद वह आयतें हैं जिनकी भाषा बिल्कुल स्पष्ट है और जिनका अर्थ निर्धारित करने में किसी संदेह की गुंजाइश नहीं है। ये आयतें, कुर्आन का मूल आधार हैं, अर्थात कुर्आन जिस उद्देश्य के लिए उतरा है, उस मकसद को यह आयतें पूरा करती हैं। इन्हीं में इस्लाम की ओर संसार को बुलाया गया है। उन्हीं में शिक्षाप्रद और उपदेश की बातें कही गयी हैं, उन्हीं में गुमराहियों का खण्डन और सत्य मार्ग को स्पष्ट किया गया है, उन्हीं में धर्म के मौलिक और आधारभूत सिद्धान्तों का उल्लेख हुआ है, उन्हीं में इबादतों, उपासनाओं, नैतिकता, अनिवार्य कर्मों और हुक्म देने और रोकने के आदेश बयान हुए हैं। मुताशबिहात (उपलक्षित) अर्थात वे आयतें जिनके अर्थ में संदेह की गुंजाइश है। यह ज़ाहिर है कि इन्सान के लिए जीवन का कोई मार्ग प्रस्तावित नहीं किया जा सकता जब तक परोक्ष सम्बन्धी तथ्यों के सम्बन्ध में कम से कम ज़रूरी जानकारी मनुष्य को न दी जाए। और यह भी ज़ाहिर है कि जो चीज़ें इन्सान की ज्ञानेन्द्रियों से परे की हैं, जिनको उसने न कभी देखा, न छुआ, न चखा, उनके लिए इन्सानी ज़बान में न ऐसे शब्द मिल सकते हैं जो उन्हीं के लिए निर्मित किए गए हों और न ऐसी जानी–बूझी वर्णन शैलियां मिल सकती हैं जिनसे प्रत्येक सुनने वाले के मन में उनका सही चित्र खिंच जाए। अनिवार्यतः यह ज़रूरी है कि इस प्रकार के विषयों के बयान के लिए शब्द और वर्णन शैलियां वे अपनाई जाएं जो वास्तविक तथ्य के निकटतम सादृश्य रखने वाली अनुभूत चीज़ों के लिए इन्सानी ज़बान में पाई जाती हैं। अतएव इन तथ्यों के बयान के अन्दर कुर्आन में ऐसी ही भाषा प्रयोग में लाई गई है। और उपलक्षित से अभिप्रेरित वो आयतें हैं, जिनमें ये भाषा प्रयुक्त हुई है।

यहाँ किसी को यह संदेह न हो कि जब लोग उपलक्षित का सही अर्थ जानते ही नहीं, तो उनको मानें कैसे। वास्तविकता यह है कि एक योग्य व्यक्ति को कुरआन के ईश वाणी होने का विश्वास अटल आयतों के अध्ययन से प्राप्त होता है, न कि उपलक्षित आयातों के अर्थ निरूपण से। जब अटल आयतों में सोच–विचार करने से उनको यह विश्वास हो जाता है कि यह किताब वास्तव में अल्लाह ही की किताब है, तो फिर उपलक्षित आयतों से उसके मन में कोई शक उत्पन्न नहीं होता। बल्कि वह यकीन रखता है कि दोनों प्रकार की आयतें एक ही स्रोत से आई हैं निःसंदेह पहली किस्म मोहकमात के मानी हमारे लिए मालूम करने

शेष पृष्ठ .....35...पर..

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

दुआ के आदाब:-

हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को दुआ मांगते सुना कि न उसने अल्लाह की तारीफ की, न नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इस आदमी ने जल्दी की, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बुलाया और उससे फरमाया या किसी और से फरमाया कि जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो पहले अल्लाह की तारीफ करो फिर मुझ पर दुरूद भेजो, फिर जो चाहो दुआ करो। (अबूदाऊद)

महबूब कल्मे:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो कल्मे ऐसे हैं जो ज़बान पर तो हल्के फुल्के हैं और तराजू में बहुत भारी होंगे और "रहमान" को बहुत प्यारे हैं वह यह हैं, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम। (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सुब्हानल्लाहि और अलहम्दुलिल्लाहि और व लाइलाहा इल्लल्लाहु और वल्लाहु अकबर कहना मुझे उन तमाम चीज़ों से महबूब है जिन पर सूरज निकलता है। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने दिन में एक सौ मरतबा "लाइलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, वहुआ अला कुल्लि शैइन क़दीर" पढ़ लिया, उसको दस गुलामों के आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा और उस दिन वह शाम तक शैतान से महफूज़ रहेगा और कोई उससे अफ़ज़ल चीज़ नहीं ला सकता मगर वही जो उससे ज़ियादा करे और फरमाया जिस ने सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि दिन में एक सौ बार पढ़े तो उसकी गलतियां अगर समुद्र के झाग के बराबर होंगी तो माफ हो जायेंगी।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने दस बार "ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहू, लहुल मुल्कू व लहुल हम्दु व हुआ अला कुल्लि शैइन क़दीर" पढ़ लिया तो वह उस आदमी के बराबर होगा जिसने चार गुलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से आज़ाद किये।

(बुखारी—मुस्लिम)

शेष पृष्ठ .....13...पर...

हया और ख़ौफ़ (लज्जा तथा भय)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

लज्जा और भय दो ऐसे मानवीय गुण हैं जो मनुष्य को हर प्रकार के पाप तथा अपमान से बचा कर उसे सम्मान प्रदान करते हैं, यह लज्जा ही है जो मनुष्य को अशलीलता से रोकती है, झूठ बोलने चुग़ली खाने से रोकती है, किसी की बहन बेटी पर बुरी दृष्टि डालने तथा दुष्कर्मों से दूर रखती है वह सोचता है कि यदि हम यह बुरे कर्म अपनायेंगे तो समाज में अपमानित होंगे लोग मुझे बुरा समझेंगे, लोग मुझ से घृणा करेंगे। तात्पर्य यह कि लज्जावान समाज के लिए बड़ा उपयोगी होता है। यह हया (लज्जा) लोगों में जन्म जाति ही से होती है अतः वह चोरी छुपे भी बुरे काम करने से बचता है लेकिन कभी बड़े होने पर शैतान के बहकाने और नफ़्से अम्मारा (तामस मन) उसको उभारता है तो वह चोरी छुपे बुरे काम करने लगता है। और सोचता है कि जब लोग जानेंगे नहीं तो उसका अपमान न करेंगे उससे घृणा न करेंगे, परन्तु जब मनुष्य में अपने मालिक अपने प्रिय रब से लज्जा उत्पन्न हो जाती है तो वह सर्वथा पापों तथा अपराधों से दूर रहने लगता है, अतः प्रयास होना चाहिए कि लज्जा मानव जाति से भी हो और अपने ख़ालिक व मालिक विधाता से उससे अधिक हो। इस ईश्वरीय लज्जा (खुदाई हया) को पैदा करने के लिए कुछ अभ्यास की आवश्यकता होती है मनुष्य कुछ समय निकाल कर चिन्तन करे कि इस जगत का विधाता जो समस्त उत्तम गुणों से सुसज्जित है, हम उसकी दृष्टि से किसी दशा में भी ओझल नहीं हो पाते वह हर समय और हर दशा में हमको देख रहा है। जब यह बात हमारे मस्तिष्क में बैठ जायेगी तो हम को ईश लज्जा (अल्लाह से हया) का गुण प्राप्त हो जाएगा। इस गुण के प्राप्त करने के लिए लज्जावान महापुरुषों से शिक्षा लेना भी आवश्यक होता है।

भय भी मनुष्य को पापों तथा अपराधों से बचाता है और वही भय गुण है जो मनुष्य को पापों तथा अपराधों से बचाए, जः भय मनुष्य को साहस हीन बनाए कायर बनाए वह भय अवगुण है, इसी प्रकार भय रहित होना भी अवगुण है, इस काल में जो आतंकवाद फैल रहा है वह भय रहित लोगों का ही कार्य है, वह अपनी जान जाने से नहीं डरते, अपने को बम से उड़ा देते हैं, इस कार्य में उन को अपने परिजनों के लिए कोई भौतिक लाभ मिलता है परन्तु क्या वह पाप रहित लोगों के प्राण ले कर अल्लाह से भी नहीं डरते हां हां हमारी बुद्धि तो यही कहती है कि वह अल्लाह पर विश्वास ही नहीं रखते अतः वह अपने आतंकी कार्यों के परिणाम से नहीं डरते, परन्तु क्या वह अल्लाह की पकड़

से बच जाएंगे? कदापि नहीं। आदमी बुरे कर्मों से इसलिए भी बचता है कि उसको अपने अपमानित होने घृणित होने का भय है, उसका भी भय है कि उसके उस कुकर्म पर दूसरे कहीं उस पर लाठी डंडा न चला दें, गोली न मारदें अतः वह बुरे कर्मों से दूर रहता है, उसको इसका भी भय है कि अगर पुलिस की पकड़ में आ गया और उसका अपराध सिद्ध हो गया तो उसके अपराध पर कारावास में रहना पड़ेगा, जुर्माना देना पड़ेगा, हो सकता है कि आजीवन कारावास हो जाये या मृत्यु दण्ड पाए इनसब शक्लों में उसके लिए तथा उसके परिजनों के लिए, उसकी सन्तान के लिए बड़ी कठिनाइयां आएंगी। अतः वह पापों और अपराधों से बचता है, परन्तु यहां फिर यह बात आती है कि अगर वह लोगों की निगाहों से बच कर या पुलिस से बच कर कोई पाप या अपराध कर सके तो वह कर गुजरता है, परन्तु यदि उसके आंतरिक में खौफे खुदा (ईश भय) हो तो वह सात कोठरियों के अन्दर भी बुराई का साहस न कर सकेगा। यहां फिर यह बात आती है कि खौफ़े खुदा कैसे पैदा हो? आदमी कुछ समय एंकात में सोचे कि ना तो हम इस संसार के विधाता की दृष्टि से बच सकते हैं न उसकी पकड़ से। यह अभ्यास लगातार करने से यह गुण प्राप्त हो जाएगा इसके लिए भी हम कहेंगे कि किसी अल्लाह से डरने वाले को गुरु बनाना आवश्यक है।

हम मुसलमानों का तो विश्वास है कि जो केवल मानना ही नहीं वास्तविकता है कि मनुष्य का जीवन समाप्त होने पर उसे उसके कर्मों के अनुसार आलमे बरज़ख़ की क़ब्र में सुख या दुख के साथ क़ियामत तक रहना होगा, फिर कियामत आएगी तो तमाम जीव धारी अपने शरीरों के साथ हश्र के मैदान में एकत्र किये जाएंगे फिर सबके कर्मों का लेखा जोखा होगा फिर तमाम पशु पक्षी जीव जंत मिटा दिये जाएंगे, मनुष्य तथा जिन रह जाएंगे, उनके लिए दो ही ठिकाने होंगे जहन्नम तथा जन्नत, जहन्नम में आग ही आग है, वहां का खान पान भी अग्नियुक्त होगा, जो लोग इस संसार में अपने जमाने के पैग़म्बरों (ईश दूतों) पर ईमान लाए होंगे परन्तु उनसे कुछ बड़े पाप भी हुए होंगे वह जहन्नम में कुछ दिनों दंडित किये जाएंगे फिर जहन्नम से निकाल कर जन्नत में भेज दिये जाएंगे परन्तु वह जो लोग इस संसार में अपने काल के पैग़म्बर पर ईमान ना लाये होंगे वह सदैव जहन्नम में जलेंगे। जहन्नम का कष्ट सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं फिर बड़ी आश्चर्य जनक बात यह होगी कि जहन्नम में मौत नहीं है, सदैव का दुख है। या अल्लाह हम को जहन्नम के कष्ट से उसकी आग से बचा ले।

जो लोग अपने काल के पैग़म्बरों पर ईमान लाए होंगे उनका अज्ञापालन किया होगा वह सब जन्नत में रहेंगे।

शेष पृष्ठ ....39...पर..

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

—अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

खुलफा-ए-राशिदीन-

अशर—ए—मुबश्शरा में सबसे प्रथम चार सज्जन अधिक उत्तम माने गए, उन सज्जनों को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वास्तविक उत्तराधिकार खिलाफ़त राशिदा के रूप में प्रदान हुआ, यह खुलफा—ए—राशिदीन कहलाए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद भी था कि मेरी और खुलफाए राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ो[1]।"

यह चार सज्जन एक के बाद दूसरे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े को पूरे इख़लास व अमानतदारी के साथ अंजाम देते रहे और इस तरह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने बाद के लिए यह भविश्यवाणी भी पूरी हुई कि नबूवत की खिलाफ़त तीस साल रहेगी। हज़रत अबू बक्र रज़ि0 पहले ख़लीफ़ा हैं, दूसरे हज़रत उमर रज़ि0, तीसरे हज़रत उस्मान रज़ि0 और चौथे हज़रत अली रजि0। हज़रत अली रज़ि0 की शहादत के बाद हज़रत हसन रज़ि0 ने छः महीने प्रबन्ध संभाला इस पर 30 साल पूरे हुए। उनकी ख़िलाफ़त तक के ज़माने को ख़िलाफते राशिदा का ज़माना क़रार दिया गया। इस पर हिजरी तारीख के 40 साल पूरे हुए। शुरु के दस साल स्वयं हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदनी जीवन काल में इस्लामी व्यवस्था की स्थापना एवं रचना के और फिर 30 साल उसकी अधीनता और प्रतिनिधित्व में गुज़रे। इस 30 वर्षीय अवधि में इस्लाम का सर्किल अरब क्षेत्र से निकल कर पास पड़ोस के देशों में फैलता और विशाल होता गया। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के तत्पश्चात मदीने के कुछ अरब कबीलों ने यह समझ कर कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के न रहने पर अब उन पर पाबन्दी नही रही, इस्लामी तरीके को छोड़ना चाहा तो उनको इस्लाम के अक़ीदे और निजाम की तरफ वापस लाया गया। इस विद्रोह की जो दुष्टता सामने आई थी उसे प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के आदेश पर सैनिक अभियान द्वारा समाप्त कर दिया गया और इस्लाम की आदर्श व्यवस्था जारी रही और ख़िलाफते राशिदा का इस 30 वर्षीय अवधि में इस्लाम का प्रभाव क्षेत्र मध्य एशिया से अफ्रीक़ा तक पहुंच गया।

खुलफा—ए—राशिदीन का यह 30 वर्षीय काल वह आदर्श काल है जो हर युग में उचित इस्लामी व्यवस्था के लिए आदर्श और मार्गदर्शक काल है, जिससे हर इस्लामी व्यवस्था को रहनुमाई लेना ही उसके इस्लामी निज़ाम होने की तसदीक़ की जा सकती है[2]।

---

1. अबू दाऊद व तिर्मिज़ी।
2. तीस वर्षीय काल रबीउल अव्वल सन् 11 हिजरी से शुरु हो कर रबीउल अव्वल सन् 41 हिजरी पर पूरा हुआ।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु-

यह प्रथम ख़लीफ़ा हैं और यह घर के बाहर के लोगों में सबसे पहले ईमान लाने वाले सहाबी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अति विश्वास पात्र और जान निछावर करने वाले सहाबी हैं। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना मुनव्वरा हिजरत करने का फैसला किया तो साथी बनाने के लिए उन्हीं को चुना। मिज़ाज व मंशा (नबवी स्वभाव और अभिप्राय) को समझने में यह सर्वश्रेष्ठ थे। अपनी वफ़ात से पहले हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ की इमामत इनसे कराई। सारी ज़िन्दगी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे और हर काम में शरीक। इसी लिए उन्हें सहाबा किराम में पहले नम्बर का व्यक्ति समझा जाता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आपके कायम मुकाम और ख़लीफ़ा हुए और आइन्दा के लिए इस्लाम की मज़बूती का ज़रीया बने। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आपकी एक साहबज़ादी हज़रत आयशा रज़ि0 को अपने निकाह में दाख़िल फ़रमाया था। इस ततह से उनकी दोस्ती और सहयोग का सम्मान किया। हज़रत आयशा रज़ि0 चूंकि कम उम्री में आपके निकाह में आ गयीं इसलिए उनका पालन पोषण आपकी संरक्षता में हुआ और बीवी होने की वजह से आपके आन्तरिक घरेलू बातों को जानने वाली हुईं। जिससे बाद में लोगों को बहुत फायदा हासिल हुआ।

प्रथम ख़लीफ़ा की खिलाफत दो साल रही। इस अवधि में आपने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मिज़ाज और हिदायत (आदेश) के अनुसार सामाजिक व्यवस्था और शासन काल को जमाया और मज़बूत किया और इस ढंग से इस्लाम का यह प्रबन्ध अपनी पटरी पर संचालित रहा फिर अपने जीवन के अन्तिम समय अपने बाद के लिए बहुत सोच समझ कर हज़रत उमर रज़ि0 को ख़लीफ़ा तय कर दिया, जिनके नम्बर दो होने का सबूत बाद में पूरी तरह साबित हुआ और उन्होंने इस्लामी प्रबन्ध को उसी पटरी पर महान कारनामों के साथ प्रचलित रखा। इसका सेहरा भी उन्हीं के चयन की ओर जाता है।

हज़रत उमर रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के बाद दूसरे दर्जे पर हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 का नाम है। वह शुरु में जब तक इस्लाम को नहीं समझ पाए थे, उसके सख़्त दुश्मन थे और समझने के बाद उसके ज़बरदस्त फ़िदाई (मोहित) बन गए और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहयोग और समर्थन में पूर्ण रूप से लग गए। इस्लाम के ज़ांबाज़ और वफ़ादार सिपाही की हैसियत से लगे रहे। यहां तक कि यह वास्तविकता स्पष्ट हो गई कि हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के बाद उन्हीं का मरतबा है। अतः हज़रत अबूबक्र रज़ि0 के बाद ख़लीफ़ा हुए और 10 साल उन्होंने इस्लाम की नुमाइन्दगी (प्रतिनिधित्व) किया और इस्लामी व्यवस्था को फैलाने में बड़ी मेहनत की। उन्हीं की ख़िलफत में अरब के पास

पड़ोस के कई महत्वपूर्ण देश इस्लामी शासन के ताबेदार बने और इस्लाम का झंडा करीब के कई देशों में लहराया और बैतुलमुकद्दस जैसा मुतबर्रक शहर जहां के लोग इस्लाम के ताबेदार अब तक नहीं हुए थे उनके सामने खुशी से ताबेदार बने और शहर मुसलमानों के हवाले कर दिया। उनकी भी एक साहबज़ादी को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने निकाह में दाखिल किया और इस तरीक़े से उनकी ख़िदमत की कद्रदानी का इज़हार किया। इस्लाम के सही मिज़ाज (उचित स्वभाव) से उनकी अनुकूलता कई मामलों में खुल कर सामने आयी।

हज़रत उमर रज़ि0 के शासन काल में महान विजय हुई और उच्चतम प्रबन्ध और अनुशासन स्थापित हुआ और नए हालात के सामने आने पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताये हुए नियमों के अनुसार आपने उनका समाधान किया। इस प्रकार अशान्ति की सूरत नहीं पैदा हुई और इस्लामी आदेश और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्थापित किये हुए अनुशासन की मज़बूती का साधन बने।

हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहु अन्हु-

तीसरे सहाबी हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 हुए जो दौलतमंद आदमी थे। ईमान लाने के बाद अपनी दौलत को ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी कामों में खर्च करने लगे और इस्लाम को ताक़त पहुंचाने के लिए तन, मन और धन से लग गए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहबज़ादी हज़रत रुकय्या रज़ि0 को उनके निकाह में दिया। उनके इन्तिक़ाल के बाद दूसरी साहबज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि0 को दिया। इस तरह उनको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दोहरा रिश्ता हासिल हुआ और जुन्नुरैन का खिताब मिला। यानी दो "नूर" हासिल करने वाले। वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दादीहाली शाखा उमय्या बिन अबदे शम्स की औलाद में थे और अपने खानदान में आली मरतबा थे। उनके इस्लाम लाने से इस्लाम को ताकत मिली थी, लेकिन उनके खानदान वालों ने इस्लाम लाने पर उनको परेशान किया और इतना परेशान किया कि उनको मक्का छोड़ कर दो बार हिजरत करनी पड़ी और जब इस्लाम को मज़बूती हासिल हो गई तो वह हबशा से वापस आए।

अल्लाह तआला ने उनको बड़ी खूबियां और विशेषताएं प्रदान की थीं। ग़ज़व-ए-तबूक में ग़ज़वे के खर्च के लिए बहुत भारी रकम द्वारा सहायता दी। उनकी विशेषताओं में शर्म व हया विशेषकर थीं जिसकी विशेषकर इज़हार क़द्रदानी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाई। उनको अपने खिलाफत काल में कुछ आक्षेप करने वालों की ओर से बड़ा कष्ट पहुंचा और उनके विरोधियों ने उन पर आक्रमण करके शहीद भी कर दिया। यह कष्टदायक घटना सन् 35 हिजरी में हुई। उस समय उनकी उम्र 82 वर्ष की थी। यह शहीद

किये जाने वाले दूसरे ख़लीफ़ा हैं उनकी शहादत की घटना से इस्लामी शासन में बड़ी बेचैनी पैदा हुई जो विभिन्न परेशानियों का कारण बनी। उनकी विशेषता में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: "हर नबी का एक साथी होता है और मेरे साथी उस्मान होंगे[1]।"

हज़रत अली रज़िअल्लाहु अन्हु–

हज़रत उस्मान रज़ि0 के बाद हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि0 ख़लीफ़ा हुए, जो अबू तालिबके बेटे होने की वजह से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा ज़ाद भाई भी थे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबूवत मिलने से पहले ही उनको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा से लेकर अपने साथ कर लिया था। इस तरह वह बचपन से ही हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ रहे। उनकी उम्र हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से 30 साल कम थी। लिहाज़ा उम्र के लिहाज़ से आप सल्लल्लाहु अलैहि के लड़के की तरह थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके जवान होने पर अपनी साहबज़ादी को उनके निकाह में दे दिया। यह साहबज़ादी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत महबूब साहबज़ादी थीं और ज़िन्दगी भर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ और करीब रहीं और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की औलाद नवासों और नवासियों की सूरत में उन्हीं से चली। हज़रत हसन और हुसैन उनके बेटे थे, जो घर से घर मिला होने की वजह से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बेटों और पोतों की तरह रहे। इस तरह उनको बड़ी शफकत (ममता) मिली। हज़रत अली रज़ि0 चूंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अपने बचपन ही से आखिरी ज़िन्दगी तक रहे। इसलिए उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत बल्कि सबसे ज़ियादा सीख और आपकी तरबियत (प्रशिक्षण) पाई, जिससे दूसरों को फैज पहुंचा।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आपसे बहुत करीब रहने और आपकी ख़ास तरबियत पाने की वजह से बाज़ लोगों का ख्याल हुआ कि आपके बाद यही ख़लीफ़ा होंगे लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दूसरे निकटतम साथी हज़रत अबूबक्र रज़ि0 से 28 साल छोटे होने की बिना पर हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ज़ियादा श्रेष्ठता रखते थे और हुजूर के मुख्य साथी होने की वजह से अधिक स्वाभाविक अनुकूलता रखने वाले थे। लिहाज़ा पहली ख़िलाफत के लिए उनका चयन हुआ और खलीफ–ए–दोयम हज़रत उमर रज़ि0 हुए वह भी हज़रत अली से 17 साल बड़े थे। इस्लाम के तीसरे ख़लीफा हज़रत उस्मान रज़ि0 हुए वह भी हज़रत अली से उम्र में बड़े थे, उनकी शहादत के बाद हज़रत अली रज़ि0 का खिलाफत के लिए चयन हुआ। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकटतम

1. सुनन तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उस्मान रज़ि0।

ज़िन्दगी गुज़ारने की वजह से इल्म, बहादुरी और दीनी विशेषताओं में प्रमुख थे। जिहाद में अपने को आगे रखने की कोशिश करने वाले थे और कई बार असाधारण सुबूत दिया। हज़रत उस्मान रज़ि0 के बाद इस्लामी साम्राज्य में जो अशान्ति की स्थिति बनी उससे निपटने में उनको सख्त मुकाबला करना पड़ा और अन्त में उनको अपने भूतपूर्व ख़लीफा की तरह शहीद कर दिया गया। यह रमज़ान सन् 40 हिजरी की घटना है।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़िअल्लाहु अन्हु-

शुरु से इस्लाम में दाखिल हुए और वह कामयाब ताजिर (व्यापारी) थे। इसलिए वह धनवान थे। उन्होंने अपने माल और तन मन से इस्लाम को ताकत पहुंचाने का काम किया। यह उन दस सहाबा में हैं जिनको जन्नत की बशारत मिली और उनको सहाबा किराम के मुख्य लोगों में स्थान प्राप्त हुआ। हब्शा की तरफ दो बार हिज़रत की, बद्र, उहद और दूसरे ग़ज़वात में बहादुरी के साथ शिरकत की। ग़ज़व-ए तबूक में एक नमाज़ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पीछे अदा की। सन् 32 हिजरी में मदीने तय्यबा में वफ़ात पायी और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफन हुए।

हज़रत तलहा रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह बिन उस्मान तैमी नाम है। बद्र, उहद और दूसरे ग़ज़वात व मार्को (संग्रामों) में शरीक हुए। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके और हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के बीच भाई चारा कराया था। उहद में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ मुशरिकीन को बढ़ते देखा तो खुद आगे आ गए जिसकी वजह से उनको चोटें आयीं और जख्मी हुए। सन् 36 हिजरी में शहादत पायी। ज़िन्दगी इस्लाम की वफादारी और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञा पालन में गुज़ारी और उनको भी दस जन्नतियों की बशारत में बशारत हासिल हुई।

हज़रत जुबैर रज़िअल्लाहु अन्हु-

हज़रत जुबैर बिन अव्वाम बिन खुवैलिद असदी मुख्य सहाबा में थे और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फूफी साहस और वीरता से भरपूर हज़रत सफिया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब के बेटे थे। हज़रत असमा बिन्त अबीबक्र सिद्दीक़ उनके निकाह में थीं। उनके बेटों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को सहाबियत का सम्मान प्राप्त है। सन् 36 हिजरी में शहादत पायी। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जुबैर को अपना "हवारी" निश्चित किया था और जिन दस सहाबा की जन्नती होने की बशारत दी उनमें उनका नाम भी लिया।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु अन्हु-

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नानीहाली खानदान से सम्बन्ध था और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आपका बड़ा ख़्याल फ़रमाते थे। ईरान के खिलाफ़ जंग में नायक भी रहे और यह भी उन दस जन्नतियों में हैं जिनको जन्नत की बशारत दी गयी।

हज़रत अबू उबैदह रज़ि-अल्लाहु अन्हु-

हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह का नाम आमिर बिन अब्दुल्लाह बिन जर्राह अल–फ़हरी है, हज़रत अबू बक्र की कोशिश से इस्लाम से सम्मानित हुए, सभी ग़ज़वात व मअ़रकों में शरीक हुए, शाम (सीरिया) का बड़ा इलाक़ा उनके ज़रीए फ़तह हुआ, शाम में ही गवर्नर थे, उसी ज़माने में सन् 18 हिजरी को वफ़ात पाई, यह भी दस बशारत प्राप्तकर्ता जन्नतियों में हैं।

हज़रत सईद बिन जैद रज़िअल्लाहु अन्हु-

जलीलुलक़द्र सहाबी हैं "साबिक़ीन अव्वलीन" सबसे पहले ईमान लाने वालों में हैं। हज़रत उमर रज़ि0 के बहनोई थे। उनसे प्रभावित हो कर हज़रत उमर ने इस्लाम लाने का इरादा ज़ाहिर किया। उनको भी जन्नत की बशारत (खुशखबरी) मिली और उनके नाम पर अशर–ए–मुबश्शरा की संख्या पूरी होती है।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मैं तुम को अल्लाह तआ़ला का सबसे महबूब कलाम सिखा दूं जो अल्लाह को बेहद महबूब है, वह सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही है। (मुस्लिम)

हज़रत अबू मालिक अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया वुज़ू करना ईमान है और अलहम्दु लिल्लाहि तराज़ू को भर देता है और सुब्हानल्लाहि वल हम्दु–लिल्लाहि आसमान व ज़मीन के बीच के हिस्से को भर देते हैं। (मुस्लिम)

गरीब लोग किस प्रकार अमीरों से बढ़ सकते हैं:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि गरीब मुहाजरीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खितमद में हाजिर हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह मालदार लोग बलंद दर्जे और हमेशा बाकी रहने वाली नेमतों में हम से बढ़ गये हैं, नमाज़ हम भी पढ़ते हैं वह भी पढ़ते हैं, और रोज़े में भी उनके बराबर हैं लेकिन उनको यह फ़ज़ीलत हासिल है कि वह अपने माल की वजह से हज करते हैं, उमरा करते हैं जिहाद करते हैं और सदक़ा करते हैं, आपने फरमाया मैं तुम को ऐसी चीज़ न बताऊँ कि तुम पहलों के बराबर हो जाओ और पिछलों से आगे बढ़ जाओ और तुम से अफज़ल कोई न होगा जब तक कि वही अमल न करेगा? अर्ज किया हाँ! आप इरशाद फरमाइये, आपने फरमाया हर नमाज़ के बाद 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अलहम्दुलिल्लाह, और 33 बार अल्लाहु अकबर कह लिया करो, अबू सालेह रावी कहते हैं कि जब अबू हुरैरा रज़ि0 से इन कलिमात की कैफियत पूछी गयी तो उन्होंने कहा सुब्हानल्लाहि, वल हम्दुलिल्लाहि और अल्लाहु अकबर। (बुखारी–मुस्लिम)

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

शिक्षक के गुण

—अफ़ज़ल हुसैन

विद्यार्थीयों के शिक्षा–प्रशिक्षण में शिक्षक के अपने व्यक्तितव की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। विद्यार्थी जानेअनजाने शिक्षकों से बराबर प्रभावित होते रहते हैं और यह प्रभाव इतना गहरा होता है कि जीवन भर साफ़ तौर से महसूस किया जा सकता है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 का व्यक्तित्व मानवता के लिए नमूना है, इसलिए शिक्षकों को नबी सल्ल0 के व्यक्तित्व के निम्नलिखित पहलुओं को विशेष रूप से सामने रखना चाहिए ताकि वे उनकी रौशनी में अपने व्यक्तित्व को ढाल सकें और अपना चरित्र छात्रों के समक्ष प्रकट कर सकें।

आप सल्ल0 का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक और प्रभावी था, जो देखता आप की ओर खिंचता और आपका इशारा पा कर अपना सब कुछ निछावर करने को तैयार रहता। शिक्षकों को भी अपने भीतर इन गुणों की झलक लानी चाहिए ताकि छात्र उनसे बिदकने के बजाय उनके पास आएं, ध्यान से उनकी बातें सुनें और शिक्षक का प्रभाव ग्रहण करें इन विशेषताओं के बिना शिक्षक अपना दायित्व ठीक ढंग से नहीं निभा सकता।

जीवन के हर छोटे बड़े मामले में आप सल्ल0 का तरीक़ा अनुकरणीय है। आप सल्ल0 का पूरा जीवन एक खुली हुई पुस्तक है, कुछ भी गुप्त नहीं है। जिन बातों की आप सल्ल0 शिक्षा देते उनका स्वयं भी पालन करते। विद्यार्थी भी शिक्षक की बातों से अधिक उसके व्यवहार का अनुकरण करते हैं, इसलिए शिक्षक को भी अपने जीवन के सभी पहलुओं पर बराबर नज़र रखनी चाहिए ताकि विद्यार्थी को अनुकरण के लिए अच्छा नमूना मिले। दूसरी सूरत में शिक्षकों की गलतियों का दुष्प्रभाव तो पड़ेगा ही, गलत रवैया का जो प्रभाव छात्रों पर पड़ेगा उसका दोष भी शिक्षक पर होगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का व्यक्तित्व ज्ञान और तत्वदर्शिता से परिपूर्ण था हरेक शिक्षक को ज्ञान और तत्वदर्शिता से पूर्ण होना चाहिए, क्योंकि सही और पूर्ण ज्ञान के बिना विद्यार्थी को अच्छी शिक्षा नहीं दी जा सकती और तत्वदर्शिता के बिना सही ढंग से उनका प्रशिक्षण नहीं किया जा सकता है। प्रशिक्षण के काम के लिए बड़ी तत्वदर्शिता चाहिए। शिक्षक को बराबर अपना ज्ञान बढ़ाते रहना चाहिए। ज्ञान के मामले में छात्र अपने शिक्षक को ही आदर्श समझते हैं। गर शिक्षक को स्वयं अपने ज्ञान पर भरोसा न हो तो छात्रों का विश्वास टूटेगा। अगर किसी बारे में सही जानकारी न हो, तो ग़लत बातें बताने के बजाय अपनी अज्ञानता स्वीकार कर लेनी चाहिए। जानकारी प्राप्त कर बाद में विद्यार्थी को बता देना चाहिए। इससे छात्रों का भरोसा बना रहेगा और शिक्षक झूठ बोलने से बचा रहेगा। हदीस शरीफ में है कि–

"अगर किसी ने बिना ज्ञान के कोई बात बता दी तो उसका दोष बताने वाले पर होगा।"

अल्लाह के नबी सल्ल0 ने स्वयं कई सवालों के जवाब में अज्ञानता स्वीकार की है और जब अल्लाह की ओर से प्रकाशना आई तो बता दिया।

क्षमा करने और धैर्य से काम लेने में अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपनी मिसाल आप थे शिक्षकों को भी नादान बच्चों का सामना होता है, जिनसे हर समय गलतियों और भूलों की संभावना रहती है, इसलिए वही शिक्षक सफल हो सकता है, जिसमें ये गुण पाये जाते हों, चिड़चिड़े और गुस्सा करने वाले लोग कभी अच्छे शिक्षक नहीं बन सकते।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 के शिष्टाचार और मिलनसारी का यह हाल था कि अपने, पराये, दोस्त, दुश्मन यहां तक कि उनसे भी जिन्हें आप पसन्द नहीं करते थे। सब सेमुस्कराते हुए मिलते। शिक्षक को भी बहुत शिष्ट और मिलनसार होना चाहिए। शिक्षकों का भी हर तरह के लोगों से सामना होता है और उनके सहयोग की ज़रूरत होती है। इन गुणों के बिना यह अपना दायित्व नहीं निभा सकता।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 की सीधी सच्ची शिक्षाओं का जवाब नादानों ने ईंट, पत्थर से दिया, मगर आप अन्त तक उनके सुधार के प्रयास करते रहे और अन्ततः सफल हुए। शिक्षक को भी शिक्षण, प्रशिक्षण और सुधार की ओर से न तो निराश होना चाहिए और न विद्यार्थी और उनके अभिभावकों को निराश होने देना चाहिए।

बलिदान, धैर्य और अल्लाह पर भरोसा रखने में अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपनी मिसाल आप थे। शिक्षक को भी इस गुण से सुसज्जित होना चाहिए। जिसे संसार और सांसारिक सुख अधिक प्रिय हो, उसे इस क्षेत्र में नहीं आना चाहिए।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 को ज़िम्मेदारी का एहसास इतना अधिक था और आप इतने लगन के साथ काम करते थे कि अल्लाह तआला ने खुद फ़रमाया, शायद आप अपने आपको इनके पीछे मार डालेंगे। शिक्षण प्रशिक्षण बहुत ही कठिन कार्य है। शिक्षक भी इन गुणों के बिना अपना दायित्व अच्छी तरह नहीं निभा सकता।

स्थिति चाहे कैसी भी जटिल हो नबी सल्ल0 बड़ी तत्वदर्शिता से उसे सुलझा देते और हर पक्ष संतुष्ट हो जाता। शिक्षक को भी आये दिन कक्षा में और कक्षा के बाहर भी तरह तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है। अगर निपटने की योग्यता न हो तो शिक्षक को बड़ी कठिनाई होगी।

बच्चों से नबी सल्ल0 को असाधारण स्नेह था उनकी बचकाना हरकतों की आप बहुत ज़ियादा अनदेखी करते थे। आपने कभी किसी बच्चे को नहीं पीटा और मारने के लिए कहा भी तो आख़िरी उपाय के तौर पर। शिक्षक को भी अपने अन्दर ये गुण पैदा करना चाहिए।

शिक्षक का स्वर

किसी पाठ का प्रभावी और सफल होना बहुत हद तक शिक्षक के स्वर पर

निर्भर करता है। स्वर अगर आकर्षक और मीठा हो तो विद्यार्थी आसानी से आकर्षित होते हैं और पाठ में नीरसता या उकताहट महसूस नहीं करते। स्वर अगर कर्कश हो या शिक्षक अगर बहुत चीख कर बोले तो कानों को बुरा लगता है, विद्यार्थी जल्दी उकता जाते हैं और थकान महसूस करने लगते हैं कर्कश स्वर से तो छोटे बच्चों पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। वे डरे सहमे रहते हैं और शिक्षक की बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाते।

शिक्षक के स्वास्थ्य के लिए भी चीख़ना चिल्लाना हानिकारक है। गला भी खराब हो जाता है और फ़ेफ़ड़े भी बहुत जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। इसी तरह अधिक बोलना और जरूरत के बिना बोलना बातों का प्रभाव कम कर देता है। स्वर के मामले में शिक्षक के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 के आदर्श से निम्नलिखित बातें प्रस्तुत की जा रही हैं। पाठ को प्रभावशाली और उपयोगी बनाने के लिए इनका पालन आवश्यक है।

1. अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का स्वर न बहुत ऊँचा होता और न बहुत धीमा। हां ज़रूरत पड़ने पर आप इतनी ऊँची आवाज़ में बोलते कि सामने वाला सुन सके। शिक्षक को भी अपनी आवाज़ न इतनी ऊँची रखनी चाहिए कि कानों को बुरी लगे और न इतनी धीमी कि सुनाई न पड़े।

2. अल्लाह के रसूल सल्ल0 पूरी बात मुंह भरकर बोलते थे। ऐसा नहीं कि आधी बात अन्दर ही रह जाए। शिक्षक को भी इसका पूरा ध्यान रखना चाहिए। नबी सल्ल0 जब बोलते थे तो वाक्यों के अंतिम शब्द और शबदों के अंतिम अक्षर तक स्पष्ट सुनाई देते थे। शिक्षक को भी इसका अभ्यास करना चाहिए। शब्दों का उच्चारण सही हो तो बात भी अच्छी तरह समझ में आएगी और विद्यार्थी के उच्चारण का सुधार भी होगा।

3. अल्लाह के रसूल सल्ल0 के स्वर में आवश्यकतानुसार उतार चढ़ाव होता था। शिक्षक को भी एक ही सुर में बोलने से बचना चाहिए और स्वर में आवश्यकतानुसर उतार–चढ़ाव पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए।

4. अल्लाह के रसूल सल्ल0 के स्वर में बनावट बिल्कुल नहीं थी। शिक्षक को भी अपने स्वर में स्वाभाविक अंदाज़ अपनाना चाहिए। कुछ शिक्षक मुंह टेढ़ा करके बोलने और आवाज़ में बनावट पैदा करने में अपनी शान समझते हैं, हालांकि इसकी वजह से वे विद्यार्थियों की नज़र में हास्यास्पद बन जाते हैं।

5. अल्लाह के रसूल सल्ल0 ज़रूरत भर बोलते थे, ज़ियादा बोलने और बेकार बातें करने से आप पनाह मांगते थे। शिक्षकों को भी बहुत बोलना पड़ता है, इसलिए बोलने में बहुत सतर्क रहना चाहिए। बिना ज़रूरत बोलने और बेकार बातें करने से बचना चाहिए।

शिक्षक की भाषा

छात्रों की शिक्षा–दीक्षा में शिक्षक की भाषा की भी बड़ी भूमिका होती है। विद्यार्थी चाहे अनचाहे अपने शिक्षक की भाषा बोलने

लगते हैं। इसलिए शिक्षक को भाषा के प्रयोग में बहुत सतर्क रहना चाहिए। अगर शिक्षक की भाषा दोषपूर्ण होगी तो छात्रों की भाषा भी दोषपूर्ण हो जाएगी। इस विषय में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से हमें निम्नलिखित मार्गदर्शन मिलता है–

1. अल्लाह के रसूल सल्ल0 बहुत ही साफ़, सादा और आमजनों की समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग करते थे। पेचीदा और अलंकारयुक्त भाषा बोलने से बचते थे। कोई भी मुद्दा हो ऐसी भाषा में बताते कि अनपढ़ और साधारण योग्यता के लोग भी अच्छी तरह समझ लेते। शिक्षक का भी छोटे बच्चों से सामना होता है, जिनका शब्द ज्ञान बहुत सीमित होता है। अगर बोलने में इसका ध्यान न रखा गया तो बच्चे समझ ही नहीं पाएंगे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 कम से कम शब्दों में अपनी पूरी बात बता देते। वाक्य छोटे और शब्द सारगर्भित होते। शिक्षक को भी चाहिए कि छोटे–छोटे वाक्यों और कम शब्दों में अपनी पूरी बात रख दे।

2. अल्लाह के रसूल सल्ल0 उन बातों को इशारों में बताते जिन्हें विस्तारपूर्वक बताना शालीनता के विरुद्ध होता। शिक्षक को भी शालीनता का पूरा ध्यान रखना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों की भाषा में भी गुण पैदा हो। ग़लत भाषा और असभ्य बात से शिक्षकों को स्वयं भी बचना चाहिए और विद्यार्थियों का भी समय पर सुधार करना चाहिए। बच्चों की भाषा में अक्सर असभ्य और बाज़ारी शब्द प्रवेश करते हैं। बच्चों को इससे रोकना चाहिए।

शिक्षा का तरीका

अल्लाह के रसूल सल्ल0 से इस बारे में हमें निम्नलिखित मार्गदर्शन मिलता है–

1. पाठ का उद्देश्य विद्यार्थी और शिक्षक दोंनो पर पूर्णतः स्पष्ट हो। नबी सल्ल0 जो कुछ बताना और सिखाना चाहते थे उसका मूल उद्देश्य आपके सामने तो स्पष्ट होता ही था सीखने वालों को भी अच्छी तरह मालूम होता था कि वे क्या और किस लिए सीखने जा रहे हैं। शिक्षक को भी इसका ध्यान रखना चाहिए ताकि पढ़ाते समय पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले पूरे ध्यान से उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहें और इधर उधर भटकने से बच जाएं।

2. विद्यार्थी में जिज्ञासा उगाकर पाठ प्रस्तुत किया जाए। अल्लाह के रसूल सल्ल0 कोई प्रश्न पूछ कर या कोई अधूरी बात कहकर लोगों की जिज्ञासा उभार देते थे और पूरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेते तब कोई बात प्रस्तुत करते।

जैसे– नबी सल्ल0 ने पूछा "सबसे बड़ा उदार कौन है?" फिर जवाब दिया। इसी तरह मिम्बर पर चढ़ते हुए तीन बार कहा– वह मारा गया, वह मारा गया, वह मारा गया।" फिर पूरी बात बताई।

सच्चाई यह है कि जब तक विद्यार्थी पूरी तरह सजग न हों, पाठ की ओर ध्यान नहीं दे सकते और विद्यार्थियों के ध्यान दिये बिना शिक्षक के प्रयास सफल नहीं हो सकते हैं।

3. सब कुछ एक साथ बता देने के बजाए, पाठ को उचित ढंग से विभाजित कर

लिया जाए। फिर छात्रों को तैयार करके एवं भाग प्रस्तुत किया जाए और इस भाग के समझ में आ जाने के बाद दूसरा भाग प्रस्तुत किया जाए। एक हदीस में इस बारे में पूरा मार्गदर्शन मिलता है। इस तरह पूरा पाठ आसानी से समझ में आ जाता है।

4. विद्यार्थी के लिए यथा संभव सुविधाएं उपलब्ध करायें, उन्हें कठिनाई में न डालें कि वह घबरा कर कंधा विदा हो जाए। "आसानियां पहुचाओ, कठिनाई में न डालो।" क्रमशः सरल से कठिन की ओर बढ़े, ताकि बच्चे उन पर क़ाबू पाते जाएं।

5. शिक्षक पढ़ाते हुए देखता रहे कि ध्यान भटकने या उकताहट न पैदा होने पाये। रसूल सल्ल0 इसका बहुत ध्यान रखते थे।

6. पठन–पाठन के लिए इनमें से कोई तरीक़ा अवसर के अनुसार अपनाया जा सकता है–

1. बातचीत का तरीक़ा
2. प्रश्नोत्तर का तरीक़ा
3. वर्णन का तरीक़ा
4. संभाषण का तरीक़ा

1. बातचीत का तरीक़ा–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 बातों बातों में बहुत सी महत्वपूर्ण जानकारियां पहुंचा दिया करते थे। यह तरीक़ा बहुत ही रोचक, सरल, स्वाभाविक और उपयोगी है। विद्यार्थी खुलकर अपना मतलब बयान कर देते हैं। शिक्षक को उनकी कठिनाई और उनके विचार का ठीक–ठीक अनुमान लगाने में सुविधा होती है और उनके सुधार और प्रशिक्षण का अवसर हाथ आता है, लेकिन बातचीत उपयोगी और निर्णायक उसी समय हो सकती है, जब इस विषय में अल्लाह के रसूल सल्ल0 के आदर्श का पूरा–पूरा अनुसरण किया जाए।

बातचीत खुले माहौल में की जाए ताकि हरेक अपना मुद्दा बेझिझक रख सके। अलबत्ता शिष्टाचार को हर हाल में बनाये रखा जाए। पूरे ध्यान और खुले मन से बात सुनी जाए। बातकाटी न जाए, एक समय में एक ही व्यक्ति बात करे। मुद्दे से अलग या अनुचित और फ़िज़ूल बात होने लगे तो मुनासिब ढंग से उसका सुधार किया जाए। बातचीत के दौरान शिक्षा प्रशिक्षण के जो स्वाभाविक अवसर हाथ आएं उनका पूरा सदुपयोग किया जाए।

बातचीत में शब्द ठहर ठहर कर बोले जाएं और आवश्यकतानुसार ज़ोर देने के लिए शब्दों को दोहराया जाए। बातचीत में सामने वाले की योग्यता, रुचि और आवश्यकता का पूरा पूरा ध्यान रखा जाए।

2. प्रश्नोत्तर का तरीक़ा–

बहुत सी बातें अल्लाह के रसूल सल्ल0 इस तरीक़े से भी समझाते कि जो कुछ बताना होता उसे पहले प्रश्न के रूप में रखते और फिर सही उत्तर देते। दूसरों को आज़ादी से पूछने का अवसर देते। प्रश्न अगर विषय से अलग होता तो बाद में अलग से उत्तर देते। यह तरीक़ा बहुत उपयोगी है। इसमें सबसे बड़ी खूबी यह है कि विद्यार्थी का मस्तिष्क प्रश्न का उत्तर खोजने में पूरा ज़ोर लगा देता है या कम से कम पूरे ध्यान और एकाग्रता से उसका उत्तर सुनने पर आमादा हो जाता है।

प्रश्न छोटे हों और स्पष्ट हों, ताकि सामने वाला अच्छी तरह समझ जाए कि उनसे क्या पूछा जा रहा है। प्रश्न पूछने का अंदाज़ ऐसा हो कि हरेक अपने कान खड़े कर ले और उत्तर सुनने पर पूरा ध्यान लगा दे। प्रश्न पूछने के बाद सोचने का अवसर दिया जाए फिर खुले मन से उत्तर सुना जाये। ग़लत उत्तर को सही कर दिया जाए। अगर उत्तर न आए तो स्वयं ही उत्तर देकर पूरी तरह संतुष्ट कर दिया जाए। जिज्ञासा उत्पन्न कर संतुष्टि की व्यवस्था न करना हानिकारक है।

विद्यार्थी को भी प्रश्न पूछने का अवसर दिया जाए क्योंकि जो अधिक पूछता है वह अधिक सीखता है, लेकिन अनर्गल और व्यर्थ प्रश्न पर झिड़कने के बजाए उसकी अनदेखी कर दी जाए या मुनासिब ढंग से टोक दिया जाए।

3. वर्णन का तरीक़ा–

किसी चीज़ के बारे में कुछ बताना होता या कोई घटना सुनानी होती, तो आप सल्ल0 कभी कभी वर्णन का तरीक़ा अपनाते लेकिन आपके वर्णन में निम्नलिखित विशेषताएं होतीं–

आप सल्ल0 वर्णन को लम्बा नहीं खींचते, बल्कि छोटा रखते, ताकि लोग उकताहट न महसूस करें।।

2. अल्लाह के रसूल सल्ल0 शब्दों से ऐसा दृश्य खींचते कि अनदेखी सच्चाइयां आंखों के सामने नज़र आती महसूस होतीं।

3. बात को अच्छी तरह स्पष्ट करने के लिए आप सल्ल0 मुनासिब उदाहरण और उपमा प्रस्तुत करते। इस तरह हर पहलू आसानी से समझ में आ जाता।

4. आवश्यकतानुसार अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपने स्वर में उतार चढ़ाव पैदा करते और जिस शब्द पर ज़ोर देना होता उस पर ज़ोर देते। इससे यह होता कि आप जो कुछ प्रस्तुत करते उसका महत्व और उसकी गहराई पूरी तरह समझ में आ जाती।

नबी सल्ल0 कोई बात केवल शब्दों में बता देने पर ही बस नहीं करते, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर उसे करके दिखाते। इस तरह उसका व्यवहारिक रूप भी पूरी तरह समझ में आ जाता।

4. संभाषण का तरीक़ा–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 आम तौर पर खुत्बा देते थे। सामूहिक शिक्षा प्रशिक्षण के लिए आप इसी तरीक़े को अपनाते। जब आप संभाषण के लिए खड़े होते तो सभा पर सन्नाटा छा जाता बहुत ही संक्षिप्त और सारगर्भित बात कहते, जो बहुत प्रभावकारी होती। आप का अंदाज़ भी बहुत जोशीला होता। आपके शरीर, चेहरे और आंखों से आप के दिल के हाल का पता चलता, अतः श्रोता बहुत प्रभावित होते। संभाषण का तरीक़ा अपनाने में शिक्षक को भी इन गुणों का ध्यान रखना चाहिए–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 अपनी बात को अच्छी तरह समझाने के लिए निम्नलिखित तरीक़े अपनाते थे–

करके दिखाते या हाथों और उंगलियों के इशारे से बताते थे। कभी–कभी रेत पर रेखाचित्र बनाकर भी समझाते। किसी जानी पहचानी चीज़ से उपमा दे कर समझाते किसी मुनासिब घटना या चुटकुले से मदद

लेते। उसके विपरीत से तुलना करके उत्तर स्पष्ट करते। आवश्यकतानुसार बात को दो तीन बार कह कर अच्छी तर समझा देते।

शिक्षक को भी इन तरीक़ों से अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए।

छात्रों से व्यवहार

छात्रों के साथ भलाई का व्यवहार करने की अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने वसीयत की है। आप का तरीक़ा यह था–

मुस्कराते हुए मिलते, नर्मी से पेश आते। सामने वाले के आत्मसम्मान का हमेशा ख़याल रखते आप सल्ल0 ने कभी किसी की बेइज़्ज़ती नहीं की। उनका दिल रखने के लिए शालीन हास्य से भी काम लेते। बीमार हो तो इयादत के लिए जाते, हाल पूछते दिलासा देते और दुआ करते। उनकी समझ और रुचि का ध्यान रखते। अपनी बातों और उपदेशों को कभी उन पर बोझ नहीं बनने देते। हरेक की बात ध्यान से सुनते। अच्छी बात की सराहना करते। अनुचित बात होती तो टोक देते। कोई अगर अपनी हद से आगे बढ़ता तो बड़े धैर्य से बर्दाश्त करते।

कोई कमी देखते तो बातों–बातों में टोकते या किसी उदाहरण से ध्यान दिलाते। उनके दुख–दर्द में काम आते। ढाडस बंधाते। साधनहीनों की स्वयं भी मदद करते और सम्पन्न सहाबा से भी उनकी मदद करवाते। उनके साथ बहुत अपनापन का व्यवहार करते। सीने से लगाकर दुआएं देते दोनों कंधों पर हाथ रख कर स्नेह से बातें बताते और उपदेश देते। कोई व्यक्ति अगर थोड़ी भी सेवा करता तो शुक्रिया अदा करते और दुआएं देते। सभा में बैठे एक–एक व्यक्ति पर ध्यान देते ताकि किसी को यह न लगे कि उस पर दूसरों की तुलना में कम ध्यान दिया गया। बच्चों के साथ आप सल्ल0 का व्यवहार तो अधिक स्नेह और प्रेम का होता। आप बच्चों को देख कर बहुत खुश होते। उनके सरों पर हाथ फेरते, गोद में उठा लेते। उनकी रुचि की बातें करते। बच्चों को एक पंक्ति में खड़ा करके उनकी दौड़ कराते। रास्ते पर मिलें तो अपनी सवारी पर बिठा लेते। ग़लतीकरें तो समझा कर माफ़ कर देते।

एक बच्चे को चूमते हुए आप सल्ल0 ने कहा कि "बच्चे जन्नत का फूल हैं।" अल्लाह के रसूल सल्ल0 के शिक्षा–प्रशिक्षण के आदर्श तरीक़े और विद्यार्थियों के साथ आपके व्यवहार का परिणाम था कि उनके भीतर श्रान प्राप्ति की असाधारण लगन और उत्कंछठा पैदा हुई। आप की हर बात उन्होंने दिल से सुनी और उन पर अमल किया। आप सल्ल0 की बातों और उपदेशों को गिरह में बांध लिया। उन्हें जीवन भर याद रखा और उन्हें दूसरों तक पहुंचाने में तन, मन, धन से लग गये। इस मार्ग में हर तरह का दुख झेला और डटे रहे। हर हाल में सत्य पर जमे रहे। अल्लाह के कलिमे को बुलन्द करने के लिए ख़ून पसीना एक कर दिया। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ। आज भी हालात बदल सकते हैं, शर्त यह है कि शिक्षक अपने अन्दर वे गुण पैदा कर लें।

❖❖❖

सीरते पाक को ग़ैरों के सामने लाने की ज़रूरत

—मौ0 सय्यिद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

रबीउल अव्वल के महीने में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विलादत हुई अल्लाह ने आपको आखरी नबी बनाया आपकी आमद और आपकी नबूवत के नूर से पूरी कायनात मुनव्वर हुई, अंधेरे दूर हुए, लातीनी निज़ाम (शैतानी व्यवस्था) टूट फूट गई और रहमतुल लिल्आलमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आमद से हर ओर बहार आ गई।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो पैगामे रहमत ले कर आए, वह हर उस शख्स के लिए नजात और कामयाबी का सबब है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाये और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत उसके दिल व दिमाग में बैठ गई और उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत को अपने लिए बरकत का सबब और कामयाबी का सबब समझा, और उसी राह में चलते हुए ज़िन्दगी गुज़ार दी।

हमारे लिए ज़रूरी है कि हम सीरते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुतालआ (अध्ययन) करते रहें और उसको अपने दिलो दिमाग की गिज़ा बना लें, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की एक एक सुन्नत पर खुद भी अमल करें और अपने अहल व अ़याल को तल्क़ीन करें कि वह भी अपनी ज़िन्दगी उस्वए रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अमल करते हुए गुज़ारें, तभी दुन्या और आखिरत की कामयाबी हमको हासिल होगी, और अल्लाह तआला के इनआ़मात की बारिश हम पर होगी।

आज जिस किस्म के हालात पेश आ रहे हैं और मुसलमानों के खिलाफ़ कुफ़्र की ताक़तें मुत्तहिद हो गई हैं और ज़िन्दगी के हर मैदान में मुसलमानों के खिलाफ़ साज़िशें की जा रही हैं, उससे नज़ात और बचाव सिर्फ इस बात में है कि हम इस्लाम के सच्चे और पक्के वफ़ादार बनें और उस्वए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हर वक्त अपने सामने रखें, नफ्स और शैतान से बचते हुए कुर्आने मजीद और हदीसे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात को हर वक्त निगाहों के सामने रखें, और उन पर हर हाल में अमल करें।

न सिर्फ यह कि खुद अमल करें बल्कि अपने दूसरे मुसलमान भाईयों को भी इस तरफ मुतवज्जेह करें, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी के गोशे सामने लायें, न सिर्फ मुसलमानों के सामने बल्कि उन गैर मुस्लिमों के सामने भी लाएं जिन से हमारे मुआशरती तअ़ल्लुकात हैं चाहे तिजारती तअल्लुकात हों या पड़ोस के तअल्लुक़ात हों इससे वह तमाम गलत फहमियां दूर होंगी जिनकी वजह से मुसलमानों के खिलाफ

शेष पृष्ठ .....31...पर..

ड्रेस कोड

—इं0 जावेद इक़बाल

इस्लाम ने इंसान की ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नहीं छोड़ा है कि जिसके बारे में रहनुमाई मौजूद न हो। सबसे पहले तो हर विषय पर कुर्आन पाक में अल्लाह तआला ने हिदायत उतार दी फिर आखिरी रसूल जगत हितैषी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर स्वयं अमल करके दिखा दिया। इस्लाम और अन्य धर्मों में सबसे बड़ा अन्तर यही है कि किसी भी धर्म में उसके गुरु या सन्देशी की अमली हिदायतें सुरक्षित नहीं हैं। उनके नबियों और रसूलों की हिदायतें तो क्या, उनके नाम और जीवन काल की घटनायें भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं, अनेक प्रकार की भ्रात्मक कथायें उन महापुरुषों के विषय में प्रचलित हो गई हैं।

मगर इस्लाम में अल्लाह की किताब, कुर्आन तो पूरी तरह अक्षर–अक्षर सुरक्षित है ही साथ ही हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतें, उनकी इबादत के तरीक़े, उनके अन्य जीवन के सभी क्रम सुरक्षित हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कैसे नमाज़ पढ़ते थे, कैसे दुआ मांगते थे, कैसे खाते पीते थे, कैसे सोते थे इत्यादि सभी कुछ ऐसा सुरक्षित है कि अध्ययन करने वाला व्यक्ति ऐसा महसूस करने लगता है जैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वह अपनी आँखों से देख रहा हो।

कुर्आन पाक ने और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने समाज को सभ्य और आदर्श समाज बनाने के लिए हिदायतें देते समय बारीक से बारीक बात भी नहीं छोड़ी है। माँ–बाप की औलाद के प्रति ज़िम्मेदारियां बचपन से जवानी तक की, औलाद की माँ–बाप के प्रति जवानी से बुढ़ापे और मरने के बाद तक की, पति–पत्नी की एक दूसरे के प्रति, पड़ोसियों की पड़ोसियों के प्रति, फिर पड़ोसी की व्याख्या भी कर दी जैसे रिश्तेदार पड़ोसी इत्यादि, ग़रीबों, यतीमों (अनाथों), बेवाओं (विधवाओं) से व्यवहार, नौकरों, मातहतों से व्यवहार, सोने जागने के तरीक़े, महफ़िल (सभा) में बैठने के तरीक़े कहां तक बयान किया जाये, सारांश यह कि ज़िन्दगी का कोई भी गोशा ऐसा नहीं है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायत न मौजूद हो।

इस समय लिबास के सिलसिले में कुर्आन की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिदायतों का उल्लेख विस्तार से करना हमारा मक़सद है। सबसे पहले कुर्आन की सूरः आराफ़ की आयत नं0 26 पर गौर करें जिसका मफ़हूम (भावार्थ) यह है–

"ऐ आदम के बेटो हमने तुम्हारे लिए लिबास उतारा है (अर्थात लिबास निर्धारित किया है, जो तीन प्रकार का है) एक तो

वह जो तुम्हारे गुप्तांगों को छ़ुपाता है दूसरे वह जो ज़ीनत (खुशनुमाई) वाला है अर्थात जो सौन्दर्य को बढ़ाता है और तीसरे वह जो तक़वा वाला है अर्थात खुदा की याद दिलाने वाला, उससे सावधान रखने वाला है और शैतानी भुलावे से सुरक्षित रखने वाला है, और यही सबसे बेहतर (सर्वोत्तम) है।

आयत का मज़मून इतना स्पष्ट है कि ज़ियादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। इसमें लिबास की तीन क़िस्में बयान हुई हैं, या यह कहें कि लिबास की तीन विशेषतायें बयान हुई हैं एक यह कि इससे सतर (छुपाने योग्य अंग) ढके जाते हैं। यह लिबास की कम से कम मिक़दार है जो औरत मर्द के लिए अलग अलग है, मगर इसमें घटिया बढ़िया *(Quality)* की कोई क़ैद नहीं है। दूसरा लिबास वह है जो ज़ीनत वाला, खुशनुमाई वाला है, ज़ाहिर है कि यह क़ीमती भी होगा, खुशरंग भी होगा, स्टाइलिश भी होगा, जिसे इंसान खास खास मौक़ों पर जैसे शादी ब्याह और ईद आदि के अवसर पर पहनता है। तीसरा लिबास जिसे अल्लाह तआला ने सर्वोत्तम बताया है उसमें घटिया बढ़िया की कोई क़ैद नहीं, स्टाइलिश और रंगबिरंगा होना भी ज़रूरी नहीं मगर ऐसा ज़रूर हो जिसे पहन कर खुद को भी और देखने वाले को भी खुदा की याद आ जाये, पहनने वाला व्यक्ति इस तक़वा वाले लिबास को पहन कर मुहज्जब (शिष्ट) नज़र आये और गन्दे आपत्तिजनक, अपराध जनक काम करने से खुद ब खुद रुक जाये।

इस वज़ाहत (स्पष्टीकरण) के बाद कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रह जाती, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं समझ सकता है कि नेक, स्वालेह, संजीदा आदमी/औरत को कैसा लिबास पहनना चाहिए। लिबास की पहली शर्त तो यह ठहरी की वह शरीर के छुपाने योग्य अंगों को छुपाये। न इतना तंग हो कि बदन से चिपक जाये और बदन का हर ख़म (आकार और उभार) स्पष्ट नज़र आये और न इतना बारीक, पारदर्शी हो कि बदन के छुपाने वाले अंग स्पष्ट झलक रहे हों। वर्तमान में फिल्मों और ग़ैर मुस्लिमों के प्रभाव से मुस्लिम लड़के लड़कियां इतना गुमराह हो चुके हैं कि उन्हें कुरआन और हदीस के आदेशों का कोई लिहाज नहीं रह गया है। हद से ज़ियादा तंग, शरीर से चिपके हुए पारदर्शी लिबास पहन कर वे गर्व महसूस कर रहे हैं उन्हें यही अच्छा लग रहा है कि बदन का अंग अंग नज़र आये।

सूरः आराफ़ की अगली ही आयत नं0 27 में अल्लाह तआला ने स्वयं ही यह भी स्पष्ट कर दिया कि–

"ऐ आदम के बेटो कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उसने जन्नत में तुम्हारे माता पिता (अर्थात आदम व हव्वा) का लिबास

उतरवा लिया था, और उनके गुप्तांग एक दूसरे को दिखला दिये थे, (कहीं तुम भी उसके बहकावे में न आ जाना) निः संदेह वह और उसका परिवार तुम को देख रहा होता है, हालांकि तुम उसे नहीं देखते। बेशक हम ने शैतान को उन लोगों का दोस्त बनाया है जो ईमान नहीं लाते"।

इस आयत की व्याख्या की भी कोई ज़रूरत नहीं, बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में फरमा दिया गया है कि शैतान के बहकावे में न आ जाना, वह तो ईमान न लाने वालों का दोस्त है। ईमान वालों को तो उसे अपना दुशमन समझना चाहिए, वह तो आदम और हव्वा को जन्नत से निकलवा चुका है, हम (अल्लाह तआला) तुम्हें सावधान कर रहे हैं कि तुम उसके धोखे में फंस कर जन्नत से महरूम न हो जाना।

अब आइये एक हदीस भी पढ़ते चलें अबू दाऊद शरीफ की रिवायत है "फ़रमाया हजरत आइशा रज़ि0 ने कि एक बार (मेरी बहन) असमा रज़ि0 रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई उस समय वह बारीक कपड़े पहने हुए थीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी तरफ से मुंह फेर लिया और कहा कि ऐ असमा औरत जब बालिग़ हो जाये तो उचित नहीं कि उसके शरीर का कोई हिस्सा नज़र आए अलावा चेहरे और हाथों के"।

एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दों के ज़नाना और महिलाओं को पुरुषों जैसे लिबास पहनने की मनाही फरमाई है।

कुर्आन व हदीस की रौशनी में अब हमारे बहन भाई स्वयं फैसला करें कि क्या लिबास के बारे में उनकी बेराह रवी (कुमार्ग गमन) उचित है? कुर्आन व हदीस के आदेशों से मुँह मोड़ कर क्या वे खुदा और रसूल के क्रोध को दावत (निमंत्रण) नहीं दे रहे?

अंत में सूरः आराफ़ की आयत नं0 31 की यह हिदायत भी पढ़ते चलें जिसमें कहा गया है कि

"ऐ आदम के बेटो तुम हर नमाज़ के वक़्त अर्थात (नमाज़ को जाते वक़्त) ज़ीनत इख़्तियार कर लिया करो"। मतलब यह है कि नमाज़ पढ़ते वक़्त जब तुम अल्लाह के सामने खड़े हो तो अच्छा साफ़ सुथरा लिबास पहन लिया करो। ध्यान देने की ज़रूरत है कि सर ढकना, टोपी पहनना भी लिबास का ही हिस्सा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक या दो बार ही बगैर टोपी नमाज़ पढ़ी है। अतः टोपी बगैर नमाज़ तो हो जाएगी जो कि किसी मजबूरी के समय की छूट है। मगर बगैर टोपी के नमाज़ पढ़ने की आदत डाल लेना, टोपी को ग़ैर ज़रूरी समझने जैसा है।

शेष पृष्ठ .....26...पर..

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज की तौफ़ीक़ से नवाज़ा

—इंजीनियर महमूदुल हसन अंसारी

नोट: इंजीनियर महमूदुल हसन अंसारी, सच्चा राही के पूर्व वरिष्ठ सहायक मास्टर मुहम्मद हसन अंसारी मरहूम के बेटे हैं, उन्होंने सन् 2015 ई0 के हज में अपनी पत्नी के साथ हज किया वापसी पर अपनी हज यात्रा विस्तार से लिखी जो फुल स्केप के दस पेजों पर कम्पोज़ है। उन्होंने उसकी एक कापी सच्चा राही को प्रकाशन हेतु भेजी परन्तु सच्चा राही में इतने पेजों की समाई नहीं है अतः उनसे क्षमा चाहते हुए लेख का सारांश उन्हीं की ज़बान में सच्चा राही में दिया जा रहा है। (सम्पादक)

हज कमेटी से जब हम दोनों के हज की मंजूरी की सूचना मिली तो हम लोग बहुत ख़ुश हुए और सफ़र की तैयारियां शुरु कीं। सफ़र से लगभग एक माह पहले अपने गाँव सरकौंडा जिला सुलतानपुर गए वहां छोटों बड़ों से मिले और विदा ले कर आ गए। सफ़र से तीन चार रोज़ पहले विभाग के मित्रों ने जिस प्रेम और आदर से हज के लिए विदा किया वह कभी न भूलूंगा। 17 अगस्त को मैं अपनी पत्नी के साथ लखनऊ के अपने निवास से घर वालों और मित्रों को विदा कह कर हज हाउस लखनऊ पहुंच गया। वहां की आवश्यक कारवाई के पश्चात अमौसी हवाई अड्डे आ गया और वहां से प्लेन द्वारा मदीना मुनव्वरा को प्रस्थान किया। और अल्लाह के फ़ज़्ल से मदीना मुनव्वरा पहुंच कर होटल में सामान रख कर हम दोनों वुज़ू करके प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचे और दुआ पढ़ कर मस्जिद में दाख़िल हुए। तुरन्त दो रकअ़त नमाज़ अदा की और मौक़ा मिलने पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़े पर सलाम अर्ज़ किया मुझे मर्दों के साथ और पत्नी को औरतों के साथ सलाम का मौक़ा दिया गया इसी प्रकार नमाज़ में भी हम दोनों अलग अलग रहते थे। मदीना मुनव्वरा में चालीस फ़र्ज़ नमाज़ों का मौक़ा दिया गया, सब नमाज़ें हम दोनों ने जमाअ़त से मस्जिदे नबवी में अदा कीं नफ़्लें भी पढ़ीं, तिलावत, दुआ़ और दुरूद की भी तौफीक़ मिली रोज़ाना रौज़े पर हाज़िरी और सलाम की तौफीक़ भी मिली, अल्हम्दुलिल्लाह।

26 अगस्त- को मदीना मुनव्वरा से बस द्वारा मक्के को रवांगी हुई थोड़ी देर में जुल हुलैफा में बस रुकी वहां हम लोगों ने नहा धो कर कपड़े बदले पत्नी ने अपने मामूल के कपड़े पहने मैंने एक चादर की लुंगी बांधी, दूसरी ऊपर से ओढ़ ली, दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और उमरे की नीयत करके लब्बैक आवाज़ से पढ़ी पत्नी ने धीरे धीरे से पढ़ी अब हम लोग एहराम में थे मेरे लिए सर खोलना और पत्नी के लिए मुँह खोलना ज़रूरी था।

अब बस फिर रवाना हुई और हम लोग लब्बैक पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा की ओर चल रहे थे रात में मक्का पहुंचे होटल में ए0सी0 कमरा मिला सामान रख कर वज़ु करके हम लोग हरम शरीफ़ गए दुआ पढ़ कर हरम में दाख़िल हुए काबे पर नज़र पड़ी तो खूब दुआएं कीं, बड़ी भीड़ थी हज़ारों लोग तवाफ़ कर रहे थे, रायबरेली के हाजी अ़ल्लन साहब का साथ मिल गया था उनसे बड़ी मदद मिल रही थी हम लोग उनके साथ हजरे अस्वद की सीध में आए तवाफ़ कि नीयत की और हजरे अस्वद की ओर हाथ उठा कर अल्लाहु अकबर कह कर लोगों के साथ तवाफ़ शुरुअ़ कर दिया सात चक्कर लगाए हर चक्कर में अल्लाह तआ़ला से ख़ूब दुआएं मांगी बताया गया कि काबे तथा हजरे अस्वद से दुआ़ मांगना वर्जित है, फ़िर दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और पेट भर भर कर ज़म ज़म पी कर सफ़ा पहाड़ी पर गए वहां चौथा कल्मा पढ़ा दुआएं पढ़ीं और सई की नीयत से मरवा पहाड़ी की तरफ चले मरवा पहुंच कर एक चक्कर हुआ फिर सफ़ा आये दो चक्कर हुए फिर मरवा गए इस तरह सात चक्कर लगाये जो मरवा पर पूरे हुए हर चक्कर में ख़ूब दुआएं मांगी, लब्बैक पढ़ना तो तवाफ़ से पहले ही बन्द हो गया था सफ़ा मरवा के बीच में दो हरी बत्तियां मिलती हैं उनके बीच में मैं झपट कर चलता था मगर पत्नी आहिस्ता चलती थीं, सात चक्करों पर हमारा उमरा पूरा हो गया, बाहर आकर हमने बाल कटाए पत्नी की चोटी से एक अंगुल बाल काट दिये और कमरे आ गए, अब हमने भी मामूल के कपड़े पहन लिए अभी आठ ज़िल्हिज्जा को लग भग 25 दिन बाक़ी थे हम लोग रोज़ाना हरम जाते और मस्जिदे हराम में कुछ नमाज़े पढ़ते ज़मज़म पीते क़ाबे की ज़ियारत करते मौक़ा मिल पाता तो तवाफ़ भी कर लेते। इसी तरह इन्तिज़ार के दिन गुज़ारे अल्लाह अल्लाह करके सात ज़िल्हिज्जा आ गई।

हम लोगों ने सात ही तारीख़ को नहा धो लिया, आठ तारीख़ को फिर एक लुंगी नीचे बांधी एक चादर ऊपर से ओढ़ी, पत्नी अपने कपड़ों में रहीं दो रकअत नमाज़ पढ़ी और नीयत की ऐ अल्लाह हज़ की नीयत करता हूं उसे आसान कर दीजिए, फिर सर खोल कर आवाज़ से तीन बार लब्बैक पढ़ी पत्नी ने धीरे से लब्बैक पढ़ी। अब हम लोग मिना गए मिना के खेमें में ज़ुह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और फिर 9 की फ़ज्र पढ़ी खूब लब्बैक पढ़ी दुआएं कीं, सूरज निकलने के बाद सब के साथ अरफ़ात गए, मस्जिदे नमिरा न जा सके ख़ेमे ही में ज़ुह्र के वक़्त ज़ुह्र पढ़ी और अस्र के वक़्त अस्र पढ़ी, और ख़ूब दुआएं की अपने लिए, उम्मत के लिए, परिवार के लिए, औलाद के लिए, देश के लिए और अपने विभाग के लोगों के लिए रब से भलाईयां मांगी। मग़रिब के वक़्त, मग़रिब पढ़े बिना मुज़दल्फ़ा रवाना हुए वहां पहुंच कर मग़रिब व इशा एक साथ अदा की वहीं रात गुज़ारी ख़ूब दुआएं की, फ़ज्र पढ़ी थोड़ी देर ठहर कर दुआएं की और हम दोनों ने 49, 49 कंकरियाँ वहीं से चुन कर मिना आ

गये फिर सात–सात कंकरियां ले कर जमरात गए और बड़े शैतान के क़रीब पहुंच कर लब्बैक पढ़ना बन्द कर दिया और उसको एक एक करके सात कंकरियां मारीं और खेमे वापस आ गये हम दोनों का हज़ तमत्तुअ़ हज़ था इसलिए क़ुर्बानी का प्रबन्ध किया जब यक़ीन हो गया कि क़ुर्बानी हो गई तो मैंने सर मुंडा दिया और बीवी की चोटी से एक अंगुल बाल काट दिये अब हमने आ़म (साधारण) कपड़े पहन लिए और दोनों हरम शरीफ़ गए, ज़ियारत का तवाफ़ किया, पहले की तरह सफ़ा मरवा के बीच सई की और मिना आ गए, ग्यारह तारीख़ को ज़ुह्र के बाद जमरात जा कर पहले छोटे शैतान को फिर बीच वाले को फिर बड़े को एक एक करके सात सात कंकरियां मारी और ख़ेमे वापस आ गए फिर बारह तारीख़ को ज़ुह्र के बाद उसी तरह तीनों शैतानों को कंकरियां मारी और ख़ेमे वापस आए और मग़रिब से पहले मिना छोड़ कर मक्के वाले होटल आ गए, अल्हम्दुलिल्लाह हमारा हज पूरा हुआ अब वतन वापसी की तारीख़ क़रीब थी यह बताना भूल गया कि घर वालो को पहले से कह रखा था कि हम दोनों की ओर से माल वाली क़ुर्बानी कर देंगे। 9 ज़िल्हिज्जा की फ़ज्र से 13 जिल्हिज्जा की अस्र तक हर फ़र्ज नमाज़ के बाद तक्बीरे तशरीक़ भी पढ़ते रहे। वतन सफर से पहले हरम शरीफ जा कर हम दोनों ने तवाफ़े वदाअ़ किया और ख़ूब दुआएं मांगी। और ख़ास तौर से दोबारह हज़ की दुआ मांगी।

ज़मज़म और ख़जूरों का तोहफ़ा ले कर ख़ैरो आफ़ियत से वतन वापस हुए, दोस्त अहबाब रिश्तेदारों, परिवार वालों और विभाग के साथियों ने भव्य स्वागत किया मैंने सबके लिए दुआएं की पत्नी सब औरतों से मिली और दुआएं की सबको खजूरें और ज़मज़म पेश किया गया, अल्लाह तआ़ला हमारे हज़ को क़बूल फ़रमाए।

❖❖❖

ड्रेस कोड.....

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय का एक वाक़िया लिख कर इस लेख को समाप्त करता हूँ। सूरः अल नज्म में सज्दे की आयत सबसे पहले उतरने वाली आयत है। जब यह आयत उतरी तो सभी उपस्थित लोगों ने सजदा किया उस समय जो मुश्रिक वहां मौजूद थे उन्होंने भी सजदा किया मगर एक व्यक्ति ने, जिसका नाम उमैय्या बिन ख़लफ़ या उतबा बिन रबीआ़ था, उसने हाथ में मिट्टी लेकर उस पर सजदा किया। केवल इतनी अवहेलना का यह असर हुआ कि उस व्यक्ति की मौत कुफ़्र की हालत में हुई। लिहाज़ा ख़तरे की बात है कि हम अपने नफ़्स और शैतान के बहकावे में आ कर दीन इस्लाम के किसी हुकूक को हीन जानें। शैतान तो है ही हमारा हमेशा का दुशमन, उसने क़सम खाई है अल्लाह तआला के सामने कि मैं तेरे बन्दों को बहकाऊँगा और जहन्नम में ले जाऊँगा अब हम खुद फ़ैसला करें कि हम कहां जाना चाहते हैं।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अगर कोई मरीज इस अक़ीदे की बिना पर कि जो कुछ होता है अल्लाह तआला की तरफ से होता है, अपने मरज का इलाज न कराये और वह इन्तिकाल कर जाये तो खुदा के यहां उस की कोई पकड़ तो न होगी? जब कि कुर्आन मजीद का हुक्म है कि अपने को हलाकत में न डालो, अस्ल हुक्म से वाकिफ करायें।

उत्तरः यह अक़ीदा अपनी जगह दुरुस्त है और एक मोमिन को यही अक़ीदा रखना चाहिए कि जो कुछ होता है वह अल्लाह तआ़ला की तरफ से होता है, लेकिन इलाज करना अक़ीदा व तक्दीर के खिलाफ नहीं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दवा, इलाज इख्तियार करने का हुक्म फरमाया है, इसलिए दवा व इलाज इख्तियार करना चाहिए, अलबत्ता अगर किसी सबब से इलाज न करा सके और इन्तिक़ाल हो जाये तो गुनाह नहीं होगा और न खुदा के नज़दीक पकड़ होगी।

(मजमउल अनहारः 180/4)

प्रश्नः जो डॉक्टर रोजाना सुब्ह को गैरुल्लाह (देवी देवता, बुत आदि) से अपने मरीज़ों की शिफ़ा (स्वस्थ होने) की दुआ करें और उसके इलाज से आम तौर से मरीज शिफायाब भी हों और लोगों में उनकी दुआ व इबादत और इलाज मशहूर हो तो क्या ऐसे डॉक्टर से इलाज कराना दुरुस्त है?

उत्तरः गैर मुस्लिम डॉक्टर अगर अपने फन में माहिर है और उसके इलाज से फाइदा होता है तो उससे इलाज कराना दुरुस्त है, सुब्ह के वक्त उसका गैरुल्लाह से दुआ करना या गैरुल्लाह की इबादत करना यह शिर्किया काम उसका जाती काम है इसका जवाबदेह वह खुद होगा लेकिन अगर मरीज यह अक़ीदा रखता है कि डॉक्टर के गैरुल्लाह से दुआ करने से फाइदा होता है या होगा तो एक मुसलमान के लिए इस अक़ीदे के साथ ऐसे डॉक्टर से इलाज कराना दुरुस्त नहीं है।

(रद्दुल मुहतारः 404/3)

प्रश्नः एक मुस्लिम ख़ातून हैं, उनके पेट का आप्रेशन होना है, क्या किसी गैर मुस्लिम डॉक्टर से आप्रेशन कराया जा सकता है? क्योंकि उनके इलाक़े में कोई मुसलमान डॉक्टर नहीं।

उत्तरः गैर मुस्लिम डॉक्टर से भी इलाज व आप्रेशन कराया जा सकता है, अल्बत्ता अगर मुसलमान डॉक्टर मिल जायें तो बेहतर है क्योंकि कवी इम्कान है कि वह शरई अहकाम का पास व लिहाज रखते हुए आप्रेशन का अमल अंजाम देंगे, गैर मुस्लिम से इसकी उम्मीद नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 404/3)

प्रश्नः एक मुस्लिम औरत दाई का काम करती है वह आम तौर पर औरतों की विलादत में दूसरों के घरों में जाती है, बसा अवकात (प्रायः) गैर मुस्लिमों में भी जाना पड़ता है तो क्या वह गैर मुस्लिमों के यहां इस काम

को अंजाम देने के लिए जा सकती है, गुनाह तो नहीं होगा?

उत्तर: विलादत के मौक़े से दूसरों के घरों में अगर जाये और खिदमत अंजाम दे तो यह मना नहीं है, चाहे गैर मुस्लिमों में क्यों न हो, अगर खिदमते ख़ल्क़ का जज़्बा हो तो उसे सवाब भी मिलेगा।

(बहरुर्राइक: 204/8)

प्रश्न: एक मरीज ऐसा है जिसका इलाज करने वाले डॉक्टर का कहना है कि उनके मरज में शराब मुफीद है और यह डॉक्टर मुसलमान है, तो क्या दवा के साथ शराब दी जा सकती है?

उत्तर: अगर माहिर मुसलमान डॉक्टर दवा के साथ शराब तजवीज़ कर रहे हैं तो दवा के तौर पर उसकी गुंजाइश है लेकिन बेहतर यही है कि उसकी जगह कोई दूसरी दवा तज़वीज़ की जाये जो हराम न हो।

(रद्दुल मुहतार: 264/7)

प्रश्न: होम्योपैथिक दवाओं के बारे में यह मशहूर है कि उनमें अल्कोहल शामिल होता है क्या उसका इस्तेमाल जाइज़ है?

उत्तर: अगर मुताबादिल (परिवर्तन शील) दवा न हो और मुस्लिम माहिर तबीब यही दवा तजवीज करें तो इसके इस्तेमाल में कोई हरज़ नहीं है।

(रद्दुल मुहतार: 284/1)

प्रश्न: आँख की बाज तक़्लीफों में डॉक्टर औरत का दूध आँख में डालने का मशवरा देते हैं तो क्या इसकी इजाज़त होगी?

उत्तर: अपनी औरत या किसी औरत का दूध बतौरे इलाज इस्तेमाल करना चाहे खारिजी इस्तेमाल हो या दाखली जाइज नहीं है, अल्लामा शामी ने इसको नाजाइज लिखा है। (रद्दुल मुहतार: 398/4)

प्रश्न: बकरी के पित्ते में दवायें मिला कर बतौर कतूर (ड्राप) आँख में डालना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: बकरी का पित्ता खाना तो नाजाइज है लेकिन दवाओं में मिलाकर आँख में लगाने की गुंजाइश होगी।

(फतावा हिन्दिया: 356/5)

प्रश्न: बाज बीमारियों में केकड़े और कछुवे को जला कर और पीस कर उसके सुफूफ दवा में मिलाये जाते हैं और मरीज को खाने के लिए बतौर दवा यह दिये जाते हैं, क्या इस किस्म की दवाओं का इस्तेमाल दुरुस्त है?

उत्तर: अहनाफ के यहां केकड़े और कछुवे खाना अगरचि दुरुस्त नहीं है लेकिन अगर मुसलमान दीनदार तजरिबेकार डॉक्टर किसी मरीज के लिए यह दवा तजवीज करे कि इसी में शिफा है तो उसके इस्तेमाल की गुंजाइश होगी।

(मजमउल अनहार: 160/4)

प्रश्न: आयुर्वेदिक दवाओं में मशहूर यह है कि गाय का पेशाब हुआ करता है क्या उनका इस्तेमाल दुरुस्त है?

उत्तर: जिन दवाओं के बारे में यक़ीन के साथ मालूम हो जाये कि उनमें गाय के पेशाब की मिलावट है, उनका इस्तेमाल जाइज नहीं है, हाँ अगर कोई मुस्लिम डॉक्टर उसी दवा को तज़वीज़ करे, तो इस सूरत में इस्तेमाल की गुंजाइश होगी।

(रद्दुलमुहतार: 246/7)

प्रश्नः अगर किसी ने कसम खाई कि मैं चाय नहीं पियूंगा, अगर वह अपनी कसम भूल गया और चाय पी ली, बाद में उसको अपनी कसम याद आई तो अब वह क्या करे? क्या उसे इस कसम का कफ़्फारा देना पड़ेगा?

उत्तरः भूल कर भी कसम के खिलाफ करने से कसम टूट जाती है और कफ़्फ़ारा देना पड़ता है, और कफ़्फ़ारा यह है कि दस मिस्कीनों को सुब्ह व शाम (दोनों वक्त) पेट भर खाना खिलाये या दस गरीबों को कपड़े पहनाये, अगर यह न हो सके तो तीन रोजे मुसलसल रखे।

(रद्दुल मुहतारः 62/3)

प्रश्नः एक शख़्स ने किसी मुआमले में अपने को बचाने के लिए झूठी कसम खा ली और कुर्आन मजीद हाथ में उठा लिया, अब वह बेहद खौफ़जदह है, क्या करे? क्या उसको अ़ज़ाब होगा तो उससे बचने की क्या सूरत है?

उत्तरः झूठी कसम खाना गुनाहे कबीरा है, और कुर्आन मजीद हाथ में उठा कर झूठी क़सम खाना और भी खतरनाक है, आखिरत में अजाब तो साबित है, उसके अलावा दुन्या में भी उसका कभी कभी वबाल आता है, इसलिए ऐसे शख्स को चाहिए कि अल्लाह तआ़ला से सच्ची तौबा करे और इस्तिग़फ़ार करता रहे और उसके वबाल से बचने के लिए अल्लाह तआ़ला से मुआफी मांगता रहे और दुआ करता रहे, साथ ही झूठी कसम खा कर जिन लोगों को ग़लत फहमी में डाला है उनकी ग़लत फहमी भी सच बोल कर दूर करे।

(मजमउल अन्हारः 261/2)

प्रश्नः दो मुसलमान आपस में कुछ मुआहदे के साथ कारोबार कर रहे थे, बाद में दोनों में इख्तिलाफ हो गया, एक ने मुआहदा तोड़ दिया और ख़िलाफ वरजी की है, क्या उसमें कोई कफ़्फ़ारा है?

उत्तरः अगर क़सम नहीं खाई थी बल्कि सिर्फ मुआहदा किया था और बिला वजह मुआहदा तोड़ दिया तो उससे गुनाह हुआ, अगर किसी खास वजह से मुआहदा तोड़ा है तो गुनाह नहीं होगा, गुनाह होने की सूरत में तौबा व इस्तिगफ़ार लाजिम है, और क़सम की सूरत में कफ़्फ़ारा भी लाजिम है, और कफ़्फ़ारे का जिक्र ऊपर मौजूद है।

(रद्दुल मुहतारः 725/3)

प्रश्नः एक शख्स की अपनी बीवी से बहस व तकरार हुई और कसम खाई की ससुराल की कोई चीज़ नहीं खाऊँगा, अब खुशदामन परेशान हैं और वह खिलाना चाहती हैं, उसकी क्या सूरत होगी?

उत्तरः क़सम खाने से कसम लाजिम होगी और उसकी सूरत यह है कि ससुराल से दी हुई कोई चीज़ खा ले और कसम तोड़ दे और कफ़्फ़ारा अदा कर दे, कफ़्फ़ारा में दस मिस्कीनों को दो वक्त खाना खिलाना या कपड़े पहनाना या तीन रोज मुसलसल रोज़े रखना है।

(रद्दुल मुहतारः 725/3)

प्रश्नः एक शख्स ने क़सम खाई कि मैं फुलां दोस्त की कोई चीज़ नहीं खाऊँगा, बाद में दोस्त ने एक उम्दा

खाने की चीज़ हिबा कर दी, उसने हिबा शुदह चीज़ अपनी मिल्क समझ कर खा ली तो क्या इस सूरत में वह हानिस (कसम तोड़ने वाला) हो जायेगा और कसम का कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा?

उत्तर: जब दोस्त की किसी चीज़ के न खाने की कसम खाई तो अब खा लेने से वह हानिस हो जायेगा, चाहे उसे हिबा ही क्यों न कर दिया गया हो, क्योंकि उर्फ व रवाज में इस किस्म की चीज़ देने वाले ही की चीज़ समझी जाती है और यह सूरत यहां मौजूद है, इसलिए कफ़्फ़ारा देना लाजिम है।

(फतावा हिन्दिया: 83/2)

प्रश्न: एक शख्स ने कसम खाई थी कि अपने भाई की कोई चीज़ नहीं लूंगा, एक चीज़ की ज़रूरत पड़ गई और उसने बतौरे कर्ज भाई से वह चीज़ ले ली, तो उस सूरत में क्या वह हानिस हो जायेगा, और क्या कफ़्फ़ारा अदा करना होगा?

उत्तर: कर्ज लेने की सूरत में इन्सान उस चीज़ का मालिक हो जाता है, इसलिए उसमें वह हानिस नहीं होगा और न कफ़्फ़ारा देना होगा।

(हवाला साबिक)

प्रश्न: एक शख्स ने नज्र मानी की मेरा बच्चा अगर बीमारी से सिहतयाब हो गया तो मैं एक कुन्टल गेहूँ सद्क़ा करूंगा, अब वह बच्चा माशा अल्लाह सिहतयाब हो गया अब वह चाहता है कि गेहूँ के बराबर रूपये सद्क़ा करदे तो क्या इसकी इजाज़त होगी?

उत्तर: गेहूँ या उसकी कीमत दोनों में से कोई भी सद्क़ा कर दे तो नज्र अदा हो जाएगी। फतावा काज़ी में इस वाकिये में जवाज़ की सराहत मौजूद है।

(फतावा काजी 169/1)

प्रश्न: अगर कोई अपने लड़के पर गुस्सा हो कर कहे कि तेरी कमाई मेरे लिए हराम है और मरने के बाद तुम मेरी क़ब्र पर मिट्टी न डालना, अब अगर वह शख्स अपने बेटे की कमाई खाना चाहे तो क्या सूरत होगी? और बेटा बाप की वफ़ात के बाद कफन दफन में शरीक़ हो तो क्या उस की इजाज़त होगी?

उत्तर: अगर कोई शख्स कोई हलाल चीज़ अपने ऊपर हराम कर ले तो उसके हराम करने से वह चीज़ हराम नहीं होगी बल्कि उसका इस्तेमाल उसी तरह जाइज़ और हलाल रहेगा जैसे पहले था, अलबत्ता क़सम खाने की वजह से कसम तोड़ने पर कफ़्फ़ारा लाजिम होगा, लिहाज़ा बाप बेटे की कमाई खाये और कफ़्फ़ारा अदा करे, और बेटा कफन दफन में शरीक़ हो, शरअन उस की इजाज़त ही नहीं बल्कि ताकीद व हिदायत है।

(शरह अत्तनवीर:63/3)

❖❖❖

सीरते पाक.....

मुतअ़स्सिबाना बरताव हो रहा है। और इस्लाम का रोशन चेहरा धूल में छुपा दिया जाता है, हमको यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि हमारा तर्जे अमल और आम मुआमलात में हमारा किरदार ही अस्ल हैसियत रखता है। ◆◆

आदर्श न्याय (ग्रहीत)

—जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

चार प्रकार के लोगः-

अब्बासी काल के खलीफा अबू जाफर मंसूर एक दिन लोगों के सामने कहने लगा "मेरे दरवाज़े पर अगर चार प्रकार के लोग हों तो उनके अलावा किसी दूसरे की मुझे ज़रूरत न पड़ेगी" लोगों ने पूछा ऐ अमीरुल मोमिनीन वह चार प्रकार के लोग कौन से हैं? खलीफा अबू जाफर मंसूर ने उन्हें बताना शुरु कियाः वास्वत में यही चार प्रकार के वह लोग हैं जो किसी मुल्क के आधार स्तम्भ हुआ करते हैं, कोई भी मुल्क उनकी उपेक्षा करके मज़बूत नहीं हो सकता, उनका महत्व बिल्कुल चारपाई के पायों की तरह है, अगर एक पाया भी अपनी जगह से गिर जाये तो फिर चारपाई ठहरती हनीं, वह चार प्रकार के लोग निम्न हैं—

1. वह काज़ी (न्याया—धीश) है जो सही न्याय करता है, उसे अल्लाह की राह में किसी मलामत (निन्दा) करने वाले की मलामत की कोई परवाह नहीं होती, वह हक़ की ताईद में अपना फैसला हर हाल में बरकरार रखता है।

2. दूसरा वह पुलिस आफीसर है जो कमज़ोर को ताकतवर से न्याय दिलाता है और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी के साथ करता है।

3. तीसरा वह "कर" वसूल करने वाला है जो आमजनों पर जुल्म किये बिना अपने कर्तव्यों को अंजाम देता है, इतना कहने के बाद खलीफा मंसूर ने अपनी शहादत की उंगली (दाहिने हाथ में अंगूठे के बगल वाली उंगली को कहते हैं) को तीन बार चबाया और हर बार आह आह की आवाज़ निकाली, दरबारियों ने पूछा चौथा आदमी कौन है ऐ अमीरुल मोमिनीन? खलीफा ने जवाब दिया "चौथा आदमी गुप्तचर विभाग का वह अफसर है जो उपरोक्त तीनों प्रकार के लोगों के कार्य विवरण को प्रमाणित करके अंतिम मुहर लगाता है। (तारीख तबरी पेज—57)

सुलतान महमूद ग़ज़नवी का बेमिसाल इंसाफः-

सुलतान महमूद ग़ज़नवी का एक भांजा था, उसका एक विवाहिता के संग अवैध सम्बंध था उसके पति ने बहुत न्याय याचना की, लेकिन किसी ने न सुनी, क़ाज़ी, वज़ीर और अमीर कोई भी शहजादे की तुलना में उस गरीब की न सुनता था, अतंतः वह आदमी हिम्मत करके स्वयं बादशाह तक पहुंचा और निडर हो कर अपने दुख दर्द की पूरी कथा कह डाली, बादशाह ने उसको पूर्ण संतुष्टि दिलाई और कहा "मैं स्वयं तुम्हारा इंसाफ करूंगा मगर इस भेद से किसी को अवगत न करना और जब वह अब तुम्हारे घर पर आये तो सीधे मेरे पास आना बादशाह ने दरबानों को भी सचेत कर दिया कि जब यह आदमी आये तो तुरन्त मुझे खबर कर दो, चाहे मैं किसी हाल में हूँ।

तात्पर्य जब शहज़ादा अपनी आदत के मुताबिक

गया और उस आदमी को उसके मकान से बाहर निकाल कर उस की पत्नी के संग जा बैठा तो उसने बादशाह को खबर कर दी, बादशाह स्वयं आया और सम्पूर्ण आत्मकथा अपनी आँखों से देख कर अपने भांजे का सर तलवार के एक ही वार से अलग कर दिया और थोड़े अंतराल के बाद पानी मांगा और वुज़ू किया और दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ अदा की।

बादशाह के सामने एक विधवा की बेबाकी:-

बादशाह मलिक शाह सलजूक़ी एक बार असफहान के जंगल में शिकार खेल रहा था, वहां एक गरीब विधवा की गाय थी जिसके दूध से उसके तीन बच्चों का पालन पोषण होता था। बादशाह की सेना के जवानों ने उस गाय को जब्ह करके खूब कबाब उड़ाये, गरीब विधवा को जब इसकी खबर हुई तो वह परेशान हो उठी, उनके इस अनुचित कार्य पर कोई रोक टोक करने वाला न था, उनकी तुलना में कोई उस बेसहारा विधवा की फरियाद सुनने को तैयार न था, पूरी रात उसने परेशानी में काटी। सुबह हुई, दिल में ख्याल आया कि कोई नहीं सुनता तो न सही, क्या बादशाह भी न सुनेगा जिसको अल्लाह ने गरीबों को ज़ालिमों से छुटकारा दिलाने के लिए इतनी बड़ी बादशाहत दी है? उसने बादशाह तक पहुंचने का प्रयास किया लेकिन नाकाम रही, अंततः उसे मालूम हुआ कि बादशाह फुलां रास्ते से शिकार को निकलेगा, अतः वह असफहान की मशहूर नहर के पुल पर आ कर खड़ी हो गयी। जब बादशाह पुल पर आया तो उस विधवा बुढिया ने हिम्मत और साहस से काम ले कर कहा "ऐ अलप अरसलान के बेटे! मेरा न्याय इस नहर के पुल पर करेगा या पुल सिरात पर? जो जगह पसंद हो स्वयं चुन ले" बादशाह के सह यात्री उस विधवा की यह दुस्साहसी देख कर हैरत में पड़ गये, बादशाह घोड़े से उतर पड़ा, और ऐसा मालूम होता था कि इस आश्चर्य पूर्ण तथा आश्चर्य जनक प्रश्न का उस पर खास असर हुआ है, विधवा से कहा "पुल सिरात" की ताकत नहीं है, मैं इसी जगह फैसला करना चाहता हूँ, कहो क्या कहती हो, उस बुढ़िया विधवा ने अपनी पूर्ण कथा सुना दी, बादशाह ने सेना की इस बरबरता तथा अत्याचार पर दुख तथा खेद ज़ाहिर किया और एक गाय के बदले उसको 70 गायें दिलाई और माला माल कर दिया, और जब उस विधवा ने कहा "तुम्हारे इस न्याय से मैं खुश हूं और मेरा अल्लाह खुश है, तब वह घोड़े पर सवार हुआ।

आह! क्या काल था, कहने वाले कैसे साहसी थे, और सुनने वाले कैसे महान तथा उच्चोत्साही"।

यदि वर्तमान काल जो सभ्य तथा सांस्कृतिक कहलाता है में कोई आदमी इस प्रकार किसी बादशाह की सवारी रोके और उससे ऐसी स्वतंत्रता से अपनी बात करे तो शायद पागल खाने भिजवा दिया जाये।

उर्दू में प्रयोग फारसी तरकीबें हिन्दी लिपि में

—सम्पादक

मुरक्कबे इज़ाफ़ी यह मुरक्कब दो शब्दों से बनता है पहले को मुज़ाफ और दूसरे को मुज़ाफ इलैहि कहते हैं जैसे शेरे–ख़ुदा, नमाज़े सुब्ह। मुरक्कबे तौसीफी इसमें भी दो शब्द होते हैं, पहले को मौसूफ और दूसरे को सिफत कहते हैं जैसे जुल्फे सियाह, गुले सुर्ख! इन दोनों तरकीबों में पहले शब्द का अन्त ज़ेर से मुतहर्रिक (गति शील) होता है। उर्दू में ज़ेर दो प्रकार की होती हैं–

1. ज़ेरे मअरूफ इसको इ की मात्रा से लिखते हैं जैसे किताब, हिसाब इन दोनों शब्दों में क, ह ज़ेर से मुतहर्रिक हैं।

2. ज़ेरे मजहूल, इसके लिए हिन्दी में कोई चिन्ह नहीं है, इसको हम (ए) की मात्रा से लिखते हैं। जैसे बेहतर शब्द में ब, जो ए, की मात्रा से गतिशील है इसको कम खींच कर पढ़ते हैं, यही ज़ेरे मजहूल है। फारसी तरकीब में पहला शब्द जो ज़ेर से मुतहर्रिक किया जाता है वह हमारे यहां हिन्दोस्तान में ज़ेरे मजहूल ही से पढ़ा जाता है इसलिए हम फारसी तरकीब के पहले शब्द को ए, की मात्रा से मुतहर्रिक करते हैं जैसे दीवाने ग़ालिब, तअमीरे हयात आदि, कुछ लोग इन तरकीबों को इस प्रकार लिखते हैं दीवान–ए–ग़ालिब, तामीर–ए–हयात आदि हम इसको अशुद्ध मानते हैं। हम न–ए–को ِ और र–ए–को ِ किस नियम से पढ़ें।

अतः हम इस विधि को शुद्ध नहीं समझते। फिर हम कई शब्दों में ए की मात्रा को ज़ेरे मजहूल की भांति पढ़ते हैं जैसेः बेहतर, केहतर, मेहतर, मेहनत, राज़ेह, सालेह, फ़ातेह, नाकेह, सवानेह, फ़वाकेह, इन सब शब्दों में हम ए की मात्रा को खींच कर नहीं पढ़ते हैं अतः फारसी तरकीब के पहले शब्द के अन्त के अक्षर पर लगी ए की मात्रा को खींच कर न पढ़ें। जैसे शेरे खुदा, दीवाने ग़ालिब, तामीरे हयात आदि। तरकीब के कुछ और रूप–

यदि पहले शब्द के अंत में अलिफ़ हो जैसे खुदा, निदा या वाव हो जैसे, बू, जू आदि तो फारसी तरकीब हिन्दी में इस प्रकार लिखेंगे–

खुदाए पाक, निदाए मिल्लत, बूए गुलाब, जूए शीर आदि। यदि पहले शब्द के अंत में या हो जैसे क़ाज़ी वादी, इसको इस प्रकार लिखेंगे क़ाज़िए शहर, वादिए कशमीर इन शब्दों में या साकिन थी जब व ज़ेर से मुतहर्रिक हुई तो अपने से पहले अक्षर से टूट गई और या से पहले वाला अक्षर चूंकि ज़ेर से मुतहर्रिक था इसलिए उसको इ की मात्रा दी गई।

यदि पहले शब्द के अन्त में तश्दीद वाली या हो जैसे नबी, वली तो उसको इस प्रकार लिखेंगे नबीये करीम, वलीये कामिल।

तशदीद वाला अक्षर दो बार पढ़ा जाता है पहली बार पिछले अक्षर से मिला कर साकिन (गतिहीन) और दूसरी बार मुतहर्रिक अतः

नबी में बा के साथ या मिलाया तो ई की मात्रा दो और दूसरे या को ए की मात्रा से मुतहर्रिक किया इसी प्रकार वली को समझ लें।

कुछ लोग तजवीद के नियम का पालन करते हुए इनको इस प्रकार लिखते हैं— नबिय्ये करीम, वलिय्ये कामिल लिखते हैं, हम उर्दू में इसको नहीं अपनाते और नबीये करीम और वलीये कामिल लिखते हैं।

यदि पहले शब्द के अंत में हाए मुख़तफ़ी (चुप ह) हो— उूर्द में ह तीन प्रकार के होते हैं—

1. दो चशमी ह, यह केवल भ, फ, थ بھ، پھ، تھ आदि में प्रयोग होता है।

2. हाए मलफ़ूज़ी (ध्वनि देने वाला ह) यह दूसरे अक्षरों की तरह मजहूल ज़ेर के लिए ए की मात्रा लेता है जैसे आहे सर्द, माहे रमज़ान आदि।

3. हाए मुख़तफ़ी यह सदेव शब्द के अंत में आता है और आवाज़ नहीं देता इसके लिए हम हिन्दी में आ की मात्रा लगाते हैं जैसे बन्दा, किस्सा आदि कुछ लोग आ की मात्रा की जगह विसर्ग लगाते हैं जैसे बन्दः, क़िस्सः।

फारसी तरकीब में पहले शब्द के अंतिम मुख़तफ़ी ह (चुप ह) को ज़ेर देने के लिए जो आ की मात्रा या विसर्ग के बिन्दियाँ हैं उनको हटा कर दो डैशों के बीच में ए बना कर दूसरा शब्द लिखते हैं जैसे बन्द—ए—खुदा, क़िस्स—ए—अ़जीब आदि इस तरक़ीब में डैश से पहले वाले अक्षर को पृथक अक्षर की भांति पढ़ेंगे जैसे द, स इस तरकीब को इस प्रकार भी लिख सकते हैं— बन—दए—खुदा, क़िस्—सए—अजीब इस विधि में डेश से पहले वाले अक्षर को जो शब्द में आधा था पूरा लिखेंगे और साकिन (गतिहीन) पढ़ेंगे। दूसरे उदाहरण—

क़िब्ल—ए—अव्वल, क़िब—लए—अव्वल,सज्द—ए—शुक्र, सज्—दए—शुकर।

कुछ लोग इस तरकीब को इस प्रकार लिखते हैं—

बन्दा—ए—खुदा, क़िस्सा—ए—अजीब, हम इसको अशुद्ध मानते हैं, हम तो इनको قصّاے عجیب، بنداے خدا पढ़ेंगे अगर कोई कहे कि आ की मात्रा ज़बर के लिए लगाई है तो वह ग़लती पर है हिन्दी के तमाम व्यंजन अक्षर ज़बर की आवाज़ के बिना पृथक पढ़े ही नहीं जा सकते। जैसे— क,کھ، ग گھ، च چھ، ज جھ आदि।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा............

मुफीद और ज़रूरी थे तो अल्लाह तआला ने पोशीदा नहीं रखे, बल्कि खोल कर बयान कर दिये, और दूसरी किस्म मुताशाबिहात के मानी अल्लाह ने अपनी मसलिहत से बयान नहीं फरमाये, ऐसी आयतों पर इस प्रकार ईमान लाना ज़रूरी है कि जो कुछ उन से अल्लाह तआला की मुराद है वह "हक़" है जियादा छान बीन और खोद कुरेद करने की इजाज़त नहीं है।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ह़या

—मौलवी मु0 इस्माईल मेरठी

ओ ह़या ओ पासबाने आबरू
नेकियों की कूवते बाजू है तू
पाक दामनी पे तुझ को नाज है
क्या ही तेरा दिल पिजीर अन्दाज़ है
जब समाई आँख में तू मिस्ल नूर
बद निगाही से रही वह आँख दूर
दामने इस्मत को तू रखती है पाक
है सदा जुर्मो गुनह से तुझ को बाक
गर न होता दरमियाँ तेरा हिजाब
फेले बद से कौन करता इज्तिनाब
ख़्वाहिशों को जो न तु देती लगाम
आदमी हैवान बन जाते तमाम
जब ख़ता करती है दिल में शोरो शर
तू ही बन जाती है वाँ सीना सिपर
ज़िल्लतो ख़्वारी तुझे भाती नहीं
ताब रुस्वाई की तू लाती नहीं
तू मजम्मत को समझती जह़ है
और मलामत तेरे हक़ में क़ह़ है
मुफलिसों की है तू ही पुश्तो पनाह
तू सुझाती है अ़रक़ रेज़ी की राह
गो तिही दस्ती के हो जायें शिकार
है मगर तुझ को गदाई नंगो आ़र
है तेरे नज़दीक मरजाना पसन्द
पर नहीं है हाथ फैलाना पसन्द
इस कदर तुझ को नहीं परवाए नान
जिस कदर तू आन पर देती है जान
आबरू खोती नहीं अज बह्रे कूत
लब पे बन जाती है तू मुह्रे सुकूत
अग्निया के दिल को गरमाती है तू
बुख्ल और खिस्सत से शरमाती है तू
तू ही सिखलाती है उनको बज्ल माल
जख़्मे ख़ंजर है तुझे रद्दे सुवाल

कठिन शब्दों के अर्थ:–

ह़या= लज्जा, पासबान= रक्षक, कूवते बाजू= शक्ति, पाक दामनी= पवित्र आचरण होना, नाज= गर्व, दिल पिजीर= प्रिय, मिस्ले नूर= प्रकाश की भाँति, दामने इस्मत= सतीत्व, जुर्म= अपराध, बाक= भय, हिजाब= परदा (आड़), फेले बद= बुरा काम, इज्तिनाब= बचाव, खता= बुराई, शोर व शर= उद्दण्डता, सिपर= ढाल, जिल्लत व ख्वारी= हीनता, ताब= सहनशक्ति, मजम्मत= निन्दा, मलामत= निन्दा, क़ह़= प्रकोप, मुफलिस= निर्धन, पुश्त पनाह= शरण, अ़रक़ रेज़ी= श्रम करना, गो= चाहे, गदाई= भीख माँगना, नंग व आर= लज्जा की बात, नान= रोटी, आन= सम्मान, कूत= आजीविका, सुकूत= मौनता, अग्निया= धनवान लोग, बुख्ल= कंजूसी, खिस्सत= कंजूसी, बजलेमाल= माल खर्च करना, जख्मे खंज़र= तलवार का घाव, रद्दे सुवाल= माँगने पर ना करना।

कुछ उर्दू शब्दों का प्रचलित हिन्दी में इम्ला

प्रचलित	शुद्ध	अर्थ	प्रचलित	शुद्ध	अर्थ
बदर	बद्र	पूरा चाँद	मुताबिकत	मुताबकत	अनुकूलता
जरया	जरीआ़	द्वारा	मुतालिक	मुतअ़ल्लिक	संबन्धित
मुकदमा	मुकद्दमा	प्राकथन	क़ल्मी	क़लमी	हाथ का लिखा हुआ
हलक	ह़ल्क़	गला	मुरासिलत	मुरासलत	पत्र व्यवहार
पैमायश	पैमाइश	नाप	मुजाहिमत	मुज़ाहमत	वाधा
गर्ज	ग़रज़	उद्देश्य	फरिश्ता	फिरिश्ता	एक सृष्टि
एतबार	एतिबार	विश्वास	फ़रज़	फ़र्ज़	कर्तव्य
अखतियार	इख्तियार	अधिकार	रजात	रजअ़त	वापसी
नज़र	नज़्र	भेंट	मुनाफिरत	मुनाफरत	परस्पर घृणा फैलाना
मुवाफिकत	मुवाफकत	सहमति	मुसाबिकत	मुसाबकत	प्रतियोगिता

फरवरी 28 दिन की कब और 29 दिन की कब?

जून, नवम्बर जानिए, अप्रैल सितम्बर तीस
फरवरी अट्ठाइस दिन की बाकी सब इक्तीस
सन् कटे जो चार से फरवरी उन्तीस
तीन सौ छियासठ का साल फरवरी उन्तीस
साले कबीसा उसे कहते उसका ये उर्दू है नाम
लीप यिअर इंगलिश में कहते, अधिवर्ष हिन्दी है नाम
चार सौ पर जो सदी तक़सीम हो तो जान लो
फरवरी अट्ठाइस दिन की उसमें होगी मान लो

सन् 2016 चार से पूरा पूरा विभाजित हो जाता है अतः इसमें फरवरी 29 दिन की होगी और साल 366 दिन का होगा।

सन् 2000 चार सौ से पूरा पूरा विभाजित हो जाता है अतः इस सन् में भी फरवरी 28 दिन की हुई थी और साल 365 दिन का हुआ था।

लेकिन सन् 2100, चार सौ से पूरा पूरा विभाजित नहीं होता है परन्तु चार से विभाजित हो जाता है अतः इस सन् में फरवरी 29 दिन की होगी। (जानकारी गणित पुस्तक "चक्रवर्ती" से ग्रहीत) ◆◇◆

लौकिक त्रुटियाँ (अ़ग़लातुल अ़वाम)

—नज्मुस्साकिब अ़ब्बासी नदवी बी0ए0 बीएड

❖ बहुत सी औरतें चेचक को कोई भूत—प्रेत का असर समझती हैं, ये सब फालतू बातें हैं, इससे तौबा करनी चाहिए।

❖ बहुत से लोग समझते हैं कि जब शबे बरात से पहले कोई मर जाए तो जब तक उसके लिए फातिहा शबे बरात न किया जाए, वह मुर्दों में शामिल नहीं होता। शबे बरात से मुतअल्लिक एक और अकीदा बहुत से लोगों में ये है कि जो मुर्दा इस साल मरता है, वह मुर्दों में शामिल नहीं होता जब तक कि उसको शबे बरात से एक दिन पहले हलवा देकर मुर्दों में शामिल न किया जाए। ये अकीदा बिल्कुल गलत है। शरीअत में इस तरह की कोई बात नहीं है।

❖ बहुत से लोग कहते हैं कि हज़रत अमीर हम्जा रज़ि0 की शहादत उन दिनों में हुई थी, ये हलवा उनका फातिहा है। इसकी कोई असलियत नहीं है और इनकी शहादत शव्वाल में हुई थी न कि शाबान में।

❖ ये जो मशहूर है कि पहली उम्मतों के कुछ लोग बन्दर हो गये थे, ये बन्दर उन्हीं की नस्ल के हैं। ये बिल्कुल गलत है।

❖ बहुत से लोगों का ये अकीदा है कि अगर कोई खुदकुशी कर के मर जाए तो उसकी रूह भटकती फिरती है, असल रूहों में जाकर नहीं मिलती। ये झूठी बात है। हाँ! खुदकुशी करना बहुत बड़ा गुनाह है।

❖ बहुत से लोग किसी खास दिन या खास वक्त में सफर करने को बुरा या अच्छा समझते हैं। ये काफिरों और ज्योतिषियों का अकीदा है।

❖ बहुत से लोगों का मानना है कि फलां जानवर के बोलने से मौत फैलती है। इसकी कोई असलियत नहीं है।

❖ किसी खास दिन या खास वक्त में सफर करने को बुरा या अच्छा समझते हैं। ये काफिरों और मुश्रिकों की मान्यतायें हैं।

❖ लोगों में ये मशहूर है कि उल्लू जिस मकान पर बोलता है, वह उजाड़ हो जाता है। यह अक़ीदा बिल्कुल गलत है।

❖ बहुतेरे लोग यह समझते हैं कि मर्द की बाई आंख और औरत की दाई आँख फड़कने से कोई मुसीबत, रंज और उसके उलट खुशी आती है। ये महज गलत ख्याल हैं।

❖ अकसर लोग समझते हैं कि हथेली में खुजली होने से माल मिलता है और तल्वे में खारिश होने या जूते पर जूता चढ़ने से आदमी सफर पर जता है। ये बिल्कुल गलत ख्याल है।

❖ बहुत से लोगों में ये बात प्रचलित है कि जिस किसी को झाड़ू मार दिया, उसका जिस्म सूख जाता है। इसकी कोई हकीकत नहीं है।

❖ बहुत सी औरतें ये समझती हैं कि नापाक कपड़ा धोकर जब तक सूख न जाए वह पाक नहीं होता और उससे नमाज दुरुस्त नहीं। ये बात सही नहीं है। गीले कपड़े पर भी नमाज़ हो

जाएगी। कपड़े का पाक होना शर्त है, सूखना शर्त नहीं है। (अग़लातुल अवाम)

❖ बहुत से लोग यह समझते हैं कि अगर कुत्ते से कोई कपड़ा, बर्तन वगैरह छू जाए तो वह नापाक हो जाता है। ये गलत है। हाँ! राल (लार) लगने से नापाक हो जायेगा। (अग़लातुल अवाम)

❖ अक्सर लोगों का ख्याल है कि नवजात बच्चा जब तक खाना खाना शुरु न करदे, उसका पेशाब नापाक नहीं होता। ये बिल्कुल गलत है। ऐसे बच्चे का पेशाब भी नापाक है।

(अग़लातुल अवाम)

❖ मशहूर है कि किसी का सतर (गुप्तांग) खुला हुआ दिखाई दे तो वुजू टूट जाता है। इसकी कोई हकीकत नहीं है, इससे वुजू नहीं टूटता।

❖ मशहूर है कि इस्तिंजा के बचे हुए पानी से वुजू नहीं करना चाहिए। ऐसा नहीं सोचना चाहिए। इससे वुजू हो जायेगा।

❖ बहुत सी औरतें यह सोचती हैं कि बाहर घूमने–फिरने से वुजू टूट जाता है। इससे वुजू नहीं टूटता। लेकिन हाँ! औरतों का बे वजह बाहर निकलना बुरा है।

❖ मशहूर है कि ज़च्चा जब तक गुस्ल न करे उसके हाथ की कोई चीज़ खाना सही नहीं। इसकी कोई हक़ीकत नहीं है।

❖ आम तौर पर औरतें बच्चा जनने के बाद 40 दिन तक नमाज़ पढ़ना जायज नहीं समझती हैं। चाहे पहले ही पाक हो जाएं चालीस दिन निफास की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत है, जब भी निफास का खून रुक जाए, गुस्ल करके नमाज शुरु करना लाजमी है।

❖❖❖

हया और ख़ौफ़.....

जन्नत में हर प्रकार का सुख होगा, वहां न लडाई झगडा न ईर्ष्या न जलन, खाने को स्वादिष्ट फल चिडियों का स्वादिष्ट मांस, रेशमी वस्त्र ऊँचे गद्दे, सोने के कंगन, पत्नियों के साथ सुन्दर हूरें, ऐसे दूध की नहरें जो कभी दूषित न हों, ऐसे पानी की नहरें जो कभी खराब नहीं होता, स्वादिष्ट मधु की नहरें, जो कभी विकृत न हों, मदिरा की नहरें जिसकी मदिरा केवल मस्ती लाने वाली हो, बुद्धि विकृत न हो, जन्नत का सुख सामग्रियों का गिनना असम्भव है, अपितु सोचना भी असम्भव और सबसे बढ़ कर जन्नत में दीदारे इलाही (ईश दर्शन) होगा जिसके आनन्द की कल्पना असम्भव है, एक मुसलमान यदि थोड़ी देर प्रतिदिन जहन्नम तथा जन्नत के विषय में चिन्तन करे तो क्या फिर पाप अथवा अपराध के निकट जाएगा? कदापि नहीं, यह सत्य है कि मनुष्यों के पथ भ्रष्ट करने के लिए शैतान को छूट है, परनतु जो लोग अल्लाह से शैतान की बुराईयों से बचने की दुआ करते रहते हैं और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी में जीवन बिताते हैं उन पर शैतान का वश नहीं चलता।

❖❖❖

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

उर्दू सीखिये

--इदारा

सामने लिखे हिन्दी की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

हमेशा सच बोलो	ہمیشہ سچ بولو
झूट से हमेशा बचो	جھوٹ سے ہمیشہ بچو
सच्चाई में नज़ात है	سچّائی میں نجات ہے
झूट में हलाक़त है	جھوٹ میں ہلاکت ہے
चुग़ली मत खाओ	چغلی مت کھاؤ
ग़ीबत मत करो	غیبت مت کرو
झूट बोलना बड़ा गुनाह है	جھوٹ بولنا بڑا گناہ ہے
गीबत करना बड़ा गुनाह है	غیبت کرنا بڑا گناہ ہے
आपस में लड़ाई मत कराओ	آپس میں لڑائی مت کراؤ
आपस में मेल कराओ	آپس میں میل کراؤ
किसी को धोका मत दो	کسی کو دھوکا مت دو
नेक बनो नेक बनाओ	نیک بنو نیک بناؤ
नेकी करो नेकी फैलाओ	نیکی کرو نیکی پھیلاؤ
मुहताजों की मदद करो	محتاجوں کی مدد کرو
मअ़जूरों की मदद करो	معذوروں کی مدد کرو
भूकों को खाना दो	بھوکوں کو کھانا دو
प्यासों को पानी दो	پیاسوں کو پانی دو
अल्लाह से दुआ करो	اللہ سے دعا کرو
सबके लिए भलाई माँगो	سب کے لیئے بھلائی مانگو
अपने लिए भलाई माँगो	اپنے لیئے بھلائی مانگو